पद भाग क्र.३

८ :– ऊपदेश को अंग

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	आज तो तेरे कछु नही जावे ०३	१
२	आन उपासी आतम द्रोही ०५	४
३	आसा तज निर आस होई ०७	५
४	बांदा आयो मोसर मती हारो ३१	६
५	बांदा मत कर झोड़ अनाड़ी ४५	७
६	बंदा और सकळ सब शोभा ५८	१०
७	बे मुख सोई जाणीये रे ७४	१०
८	भजो तो राम भजी ज्यो ०१ज्यो बोले ८०	१२
९	भजो तो राम भजी ज्यो ०२षट क्रिया ८१	१२
१०	भजो तो राम भजी ज्यो ०३सत्त जुग मे८२	१३
११	भजो तो राम भजी ज्यो ०४केवळ ८३	१५
१२	भजो तो राम भजी ज्यो ०५ मून गहे ८४	१६
१३	छोगाळा नर रे ९५	१७
१४	देखो रे देखो साधो ९७	१८
१५	ध्रिग ध्रिग हो मन ध्रिग तोय ११०	१९
१६	अेक मना सिध अेक मना सिध १२०	२०
१७	फिट मन फिट लाणत तो ने १२२	२१
१८	फुटरिया मन रे १२३	२२
१९	ग्यानी ग्रंथ सब सांभळो १३५	२३
२०	हरसूं हुँ मिलियो चाहिये १४७	२४
२१	हरी को भेद नियारो रे १४८	२५
२२	हरि को भेद न्यारो रे १४९	२६
२३	इण मन सूं कहो काहा कीजे हो १५७	२७
२४	जे तलफो कोई जीव १७१	२८
२५	जुग कछु लेत देत कछु नाही १८३	२८
२६	करणी करे रेणी रहे १९६	२९
२७	मनवाँ लाणत तोय रे २२७	३०
२८	मत भूलो हो माया संग २२९	३१
२९	म्हाने अबचळ बर प्रणावो ओ २३७	३२
३०	मोख भजन बिन नाही रे २४४	३३
३१	नर तांका कोण हवाला हे २४८	३४

३२	ओ तज दूजा जे भजे २५४	३७
३३	पांडे ने:चळ ग्यान बिचारो २६४	३७
३४	पेम पियाला पिजिये २७५	३८
३५	प्राणी मेरा राम नाम लिव जाय २८६	३९
३६	प्राणियाँरे नाँव गहो मुख माय २८७	४०
३७	प्राणियाँरे नाँव गहो तत्त सार २८९	४१
३८	प्राणियां रे सतगुरु तारण हार २९१	४२
३९	राम कथे ओऊं मथे रे २९५	४४
४०	रे मन हरसूं डरप ३०२	४५
४१	रे नर समज केवल ध्याईये ३०३	४६
४२	सबसुँ निरसा होय ३०७	४७
४३	समझ समझ प्राणिया जो मोख ३२६	४८
४४	संतो अेसा महल बणाया ३३१	४९
४५	संतो भाई रे भेव मिल्या गम आवे ३४५	५१
४६	सुणो भाई संतो म्हे ग्यान दूं ३९०	५२
४७	सुणो सरब जुग में हेला दिया ३९१	५२
४८	तीन रीत प्रमोद हमारो ३९७	५३
४९	तूं तो निरगुण पद सूं मिल रे ४०१	५४
५०	तू तो शाम धनी को बररे ४०२	५५
५१	तुं तो ऊण पद सूं मिल जारे ४०३	५७

०३

|| पदराग जोग धनाश्री ||

आज तो तेरा कछु नही जावे

आज तो तेरा कछु नही जावे || तूं मगन मतवाळा कुवावे रे लो || टेर ||

आज तेरी शरीर प्रकृति निरोगी एवम् पाँच इन्द्रियों के सुख भोगनेवाली पूर्ण जवानी से हाथी के समान मदोमस्त उन्मात है। इस उन्मत्त जवानी के कारण तू मग्न मस्ती में वासनाके भोग का मतवाला बना है। इसलिए आज तेरा कुछ भी नहीं जाता,परंतु जिस दिन तेरा यह शरीर तेरा ही प्राण इस शरीर में रखने में असमर्थ बनेगा यमराज के रुप में आया हुआ ब्रम्हकाल तुझे घेरकर ले जाएगा तब तू बहुत दु:खी होगा। ।।टेर।।

खेती बिणज तूं त्यागर बेठो || रामत जीव खेलावे रे ||

जां दिन काळ पड़ेगा सिरपे || वां दिन खबरां पावे रे लो || १ ||

जैसे कोई मनुष्य आषाढ में खेती की फसल उगाने के समय खेती करता नहीं और जुआ सट्टा खेलने में अपना जीव रमाता,कार्तिक में जब अन्य लोगो के घर पर गाड्यिाँ भर भरकर अनाज आता और इसके घर में खेती न करने कारण अनाज का एक दाना भी नहीं आता,तब अन्योके अनाज धन के सुख देख देखकर अनाज के सुख के लिए झुरता और आषाढ में खेती में फसल उगाई नहीं इसका दु:ख करता इसीप्रकार तुझे निरंजण काल के दु:खो से मुक्त करानेवाला रामनाम लेने का मनुष्य समय मिला था,उस समय तू इन्द्रियों के सुखों के मद मस्ती में उन्मत्त रहा और रामनाम लिया नहीं। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अन्त समय पर तू निरंजण काल को तेरे सिरपर मंडराते देखकर तुझे मनुष्य देह में रामनाम नहीं लिया इसकी खबर याने समझ पडेगी तब तू रामनाम नहीं लिया और मनुष्य देह का समय झूठे वासनाओं के सुखों में गमाया इसका पछ्तावा करेगा जैसे किसी मनुष्य को मेंले में व्यापार करके कमाई करने का समय प्राप्त होता और तब वह मनुष्य व्यापार करके कमाई न करते मेंले में लगे हुए तमाशा आदि नीच खेलों में जो नजदीक है वह नजदिक का सभी धनमाल खर्च कर देता और धनहिन हो जाता। शाम होते ही मेंला बिखर जाता तब उस मनुष्य के पास तमाशा आदि निच खेलो में पैसा गमाने से एक पैसा नहीं बचता तब वह मनुष्य व्यापार कर पैसा नहीं कमाया और झूठे तमाशो आदि में पैसे गमाया इसका भारी दु:ख करता ऐसे ही तू संसाररुपी मेंले में रामनाम का व्यापार करने आया है,परन्तु तु संसाररुपी इस मेले में रामनाम का व्यापार न करते कुटुम्ब, परिवार,पुत्र,पुत्री के झूठे मोह ममता के सुख विलास में लग कर अपने श्वास गमा रहा और काल के दु:ख से बचानेवाला रामनाम नहीं ले रहा है अन्तिम में जब तेरा अमूल्य शरीर त्यागने का समय आएगा और काल तुझे घेरने लगेगा तब काल के दु:ख देखकर कुटुम्ब परिवार,पुत्र,पुत्री आदि की मोह ममता झूठी थी यह खबर याने समझ आएगी परन्तु उस समय इस समझ का काल से बचने के लिए कोई उपयोग नहीं

हो पाएगा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।१।।

राम रतन धन त्याग्यां जावे ।। कोडी हर्कर ल्यावे रे ।।
अंत पडे कोई लाय लावणा ।। तां दिन निर्धन कवावेरे लो ।। २ ।।

जैसे किसी मुर्ख मनुष्य के हाथ में रत्न कमाने का मौका आता और वह मनुष्य रत्न न कमाते रतन कमाने की विधि त्याग देता और जिसकी दु:ख पडने पर दु:ख मिटाकर सुख पाने की कोई कीमत नहीं है ऐसी कवडीमोल धन भाग–भागकर हर्षित होकर जमा करता। दुर्भाग्यवश घर को आग लगकर सारी सुख देनेवाली वस्तुएँ आग में राख हो जाती और उस मनुष्य को फिर से संसार सुख पाने के लिए संसार बसाने की जरुरत पडती तब नजदीक रत्न,धन नहीं रहता और जिसे कुछ कीमत नहीं है ऐसी कवड्याँ पास रहती। इन कवड्यों से संसार बसाने नहीं आता ऐसी निर्धन अवस्था बनती। ऐसे निर्धन अवस्था में रतन धन कमाने का समय था तब कमाया नहीं इसका दु:ख करता और पछ्ताता। ऐसे ही मनुष्य देह में काल के दु:ख से मुक्त करानेवाला राम रतन धन पाने का भारी समय प्राप्त हुआ था,तब रामरतन धन प्राप्त करता नहीं और कवडी मोल होनकाली ब्रम्हा,विष्णु, महादेव,शक्ति आदि स्वर्गादिक की चंद दिनो की कृत्रिम सुखों की भक्तियाँ दौड दौड्कर हर्षायमान होकर प्राप्त करता। यह कवडी मोल भक्ति अंतसमय पर काल के अग्निज्वाला से छुड्वाने के कोई काम नहीं आती। काल के अग्निज्वाला से छुड्वाने के लिए राम रतन यही धन काम में आता। तेरे पास यह राम रतन धन न होने के कारण काल से बचने के लिए तू निर्धन बनता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।२।।

चोखा त्यागे खोटा लेवे ।। चोरां के संग जावे रे ।।
जां दिन डाव पडेगा जम सूं ।। तां दिन खबऱ्यां पावे रे लो ।। ३ ।।

जैसा कोई मनुष्य सच्चे धनवान व्यापारी का संग त्यागता और चोर तस्करो का संग करके चोरी करके धन कमाने के लिए चोरो के संग जाते आते रहता। चोरी करने के गुनाह में एक दिन उसे पुलिस पकड्ते और चोरी करने के गुनाह में मार मार कर हाथ पैर, मुख हरे काले कर देते तब उसे चोरो का संग बुरा है यह समझता ऐसेही प्राणी महासुख देनेवाला सतस्वरुप साहेब त्यागता और दुर्गा,सितला,भेरु,खंडोबा,पिरोबा,मुंजोबा आदि पापकर्ते देवतावोंका संग करता। अंतिम समय पर जब जीव की काल से गांठ पड्ती तब काल उसे चौरासी प्रकार के नरक में महादु:ख भोगना पड्ता है,तब उसे पाप कर्ते देवताओं का संग बडा बुरा है यह समझ आता है। ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।३।।

सर्वर का जळ त्याग्यां जावे ।। मृग नीर कूं ध्यावे रे ।।
जां दिन तन में प्यास लगेगी ।। वां दिन खबरां पावे रे लो ।। ४ ।।

जैसा कोई मुनष्य सरोवर याने तालाब का जल त्यागता और मृग जल से प्यास मिटती

यह गाढी समझ बनाकर रहता है। जब उस मनुष्य को कडी प्यास लगती तब उसकी प्यास मृगजल जरासी भी नहीं बुझा पाता और प्यास के कारण उसका देह तडप-तडप कर मरता तब उसे असली जल की समझ पडती ऐसे ही जीव रामजी के तृप्त सुखोका देश त्यागता और ब्रम्हा,विष्णु ,महादेव,शक्ति आदि के भक्तियों से तृप्त सुख सदाके लिए पाऊँगा ऐसी समझ बनाता और इनकी भक्तियाँ करता। इनकी भक्तियों से चंद दिनों के लिए कृत्रिम सुख मिलते और वे कृत्रिम सुख खुटनेपर काल ४३,२०,००० साल के लिए चौरासी लाख प्रकार के दु:ख भरे गर्भो में डालता तब रामजी के तृप्त सुख त्यागने का नुकसान समझता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।४।।

इम्रत छाडे बिष बिसावे ।। भोजन त्याग नर जावे रे ।।
तां दिन भूक लगे नर तो कूं ।। वां दिन खबरां पावे रे लो ।। ५ ।।

जैसे कोई मनुष्य अमृत मिला तो भी अमृत पीता नहीं, दौड दौड्कर विष पीता और तडप तडपकर अति पीडा में मरता। ऐसे तडप-तडप कर मरने पर विष पीने का दु:ख क्या है यह उसे समझता ऐसे ही अमृत याने सदा अमर होने की विधि त्यागता और बारबार जन्म-मरण के चक्कर में पडने की विषय वासनावों की विधि दौड-दौड धारण करता। उस विकारी विधि से गर्भ के दु:ख में बार-बार पडता तब अमृत की विधि त्यागने से गर्भ के दु:ख में पडने का भारी नुकसान हुआ यह उसे समझता। कोई मनुष्य छप्पन भोग भोजन त्यागता और जिस में भूख मिटानेवाला अनाज का एक दाना भी नहीं ऐसे भुस को दौड-दौड्कर घरपर जमा करता परन्तु जब उसे भूख लगती और उसे भूसेसे जरासी भी भुख नहीं जाती यह समझता तब उसे पछ्तावा आता है। ऐसेही हर जीव को अनंत सुख की भुख लगी है और अनंत सुख देनेवाले अमर पद का ज्ञान उपलब्ध है फिर भी जीव यह ज्ञान त्यागता सुखों की भूख नहीं मिटती ऐसा भ्रम उपजानेवाले त्रिगुणीमाया याने ब्रम्हा, विष्णु,महादेव तथा शक्ति का ज्ञान दौड-दौड प्राप्त करता। काल जीव को घेरकर अन्तिम समय में दु:ख में डालता। जीव को ऐसे दु:ख में सुख की भयंकर भूख लगती परन्तु जीव की ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति आदि के भक्तियों से सुख की जरासी भी भूख मिटती नहीं तब अनंत सुख देनेवाला अमर पद का ज्ञान कैसा भारी है यह समझ आती ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।५।।

चूना बंद घर त्यागर देवे ।। झूंपे मांय बिराजे रे ।।
तां दिन लाय लगे उपराडे ।। तां दिन करडी बाजे रे लो ।। ६ ।।

जैसे कोई मनुष्य चुनाबंद घर जो आग से खाक होगा नहीं ऐसा त्यागता और आग में राख होगी ऐसे झोपडी में निवास करने जाता। जिस दिन झोपडी में आग लगती और वह झोपडी सभी वस्तुओंके साथ आग के चपेट में भस्म हो जाती उस दिन चूनाबंद घर त्यागकर झोपडी में निवास करने का भारी पछ्तावा करता इसीप्रकार सतस्वरुप की भक्ति त्यागकर

अगम घर त्यागता और विषय वासना में रमकर चौरासी लाख प्रकार के घर में जन्मता-मरता ऐसे काल के दु:ख के आग में पड्ता है। तब उसे अगम घर की पक्की समझ आती ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।६।।

नगर का पंथ छाडज दिया ।। गोड नाळा ऊठ धाया रे ।।
अेसो जाय बीलावे बन में ।। वहाँ बोत दु:ख पावे रे लो ।। ७ ।।

खाने का,पीने का,घूमने का अनेक सुख देनेवाला शहर का रास्ता त्यागता और अनेक दु:ख देनेवाला गाय बैलो का जंगल में खत्म होनेवाला रास्ता पकड लेता,जंगल में अटक जाता और वहाँ भूख प्यास से तड्पता,जहरीले साँप बिच्छुओ में फँसता ऐसे बहुत दु:ख वहाँ भोगता तब नगर का रास्ता त्याग देने का पछ्तावा करता ऐसे ही काल के दु:ख से मुक्त कर महासुख का अमरलोक का रास्ता त्यागता और विषय विकारो में लगकर सुखों के लिए तड्पना पड्ता ऐसे चौरासी लाख योनि का मार्ग पकड लेता और वहाँ अनंत दु:खों में अटक जाता। तब अमर लोक का रास्ता त्यागने से कैसा दु:ख झेलना पड्ता यह समझाता। ।।७।।

भक्त बिना सुण सब दुख पासी ।। अे दिष्टांग बताया रे ।।
के सुखराम सुणो सब कोई ।। राम ना भूलो भाया रे लो ।। ८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,राम भक्ति के सिवा कैसे-कैसे जम के दु:ख पड्ते यह जगत के अनेक दृष्टांत बताके तुझे समझाया इसलिए तू रामनाम मत भूल भूलने पर कैसे कैसे अनंत दु:ख पड्ते यह खबर ले,याने समझ ले। ।।८।।

०५

।। पद राग ।।

।। आन उपासी आतम द्रोही ।।
आन उपासी आतम द्रोही ।।
तां को संग निवार ।। संतो भाई नाम गहो तत्त सार ।। टेर ।।

संतो भाई,तत्तसार नाम धारण कर। जो तत्तसार नाम की भक्ति न करते बली माँगनेवाले देवताओंकी भक्ति करते और उन देवताओंको निरपराधी जीवों के वध कर बली देते ऐसे सागट याने आत्मद्रोही ऐसे विकारीयोंका संग मत कर। ।।टेर।।

राम सनेही नित पत मिलजो ।। सागट दूर निकार ।।
प्रभू नाव बिना बहुत संग दूजा ।। ता मे बहुत बिकार ।। १ ।।

जो रामजी से प्रीति करते उनसे नित्य मिलते रहो और जो तत्तनाम सार की निंदा करते,प्रभु के नाम की निंदा करते ऐसे सागट से सदा दूर रहो। प्रभु के नाम लेनेवाले संतो के सिवा अन्य अनेकों के संगत में विकार ही बढते है। ।।१।।

राम सनेही दुर्बल भूखा ।। मिलज्यो बाह पसार ।।
सागट पांडे राव लोई ।। सब जन माथे मार ।। २ ।।

रामजी के स्नेही दुर्बल रहे,भूखे रहे,प्यासे रहे फिर भी उनसे बाह पसार याने बहुत प्रेम से मिल और जो सागट है,वह चाहे ज्ञानी,पंडित रहो या राजा रहो उनसे दुर रह। उनके साथ रहने से काल कर्मो का मार सिरपर पडेगा। ।।२।।

कोढी कुष्टि हरिजन मिलज्यो ।। ता घट ब्रम्ह बिचार ।।
जन सुखराम भेद बिन भगती ।। सबे काळ की चार ।। ३ ।।

जिसके घट में सतस्वरुप ब्रम्ह प्रगट है ऐसा हरिजन कोढी है,कुष्टी है तो भी उससे मिल उसका देह मत देख,उसके घट में प्रभु प्रगट है यह देख। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो–जो प्रभु पाने के भेद की भक्ति नहीं करते वे सब ही काल का चारा है। ।।३।।

०७

।। पदराग बिलावल ।।

आसा तज निरआस होय
आसा तज निरआस होय ।। भक्ति नर किजे ।।
तीन लोक सुख छोड़ के ।। चरणा चित्त दीजे ।। टेर ।।

अरे मनुष्य,तीन लोकों के माया के सुखो की आशा छोड और इन सुखों से उदास होकर गुरु के चरणो में लिन हो और साहेब की भक्ति कर। ।।टेर।।

सपना ज्युं सुख जग का ।। मत भूलो कोई ।।
माया ठगणी लार हे ।। मत डुबो लोई ।। १ ।।

ये तीन लोकों के सभी सुख सपनों के सुख समान झूठे है ऐसे झूठे सुखों में कोई भुलो मत। यह माया सपने सरीखे सुख बताकर जीवों को ठगाती। यह माया ठगणी,जीवों को इन झुठे सुखों में अटकाने के लिए पीछे लगी रहती। लोगो तुम कोई इनके चमत्कारो में डूबो मत। ।।१।।

बख माया के जोर हे ।। नाना बिध घाता ।।
सिंवरण बिना संसार में ।। माया की बाता ।। २ ।।

माया ने जीवो को ठगाने के लिए जोरदार डावपेच रचे है जैसे मृग को रेतीले जमीन प्यास पर बुझेगी ऐसे जल का सागर दिखता। जब उसे प्यास लगती तब वह प्यास बुझाने के लिए उस जल के पिछे दौडते रहता। दौड दौड के अंत में थक जाता और मर जाता लेकिन उस जल से उसकी प्यास मिटती नहीं। इसप्रकार जीव को पाँच इंद्रियों के सुखों में तृप्त सुख दिखते परंतु उन सुखों में अंतिम तक तृप्त सुख मिलते नहीं उलटे काल के दु:ख पडते। नाना प्रकार के घात याने दगे बनाए है। संसार में साहेब के स्मरण बिना सभी करणियाँ माया के ही डावपेच की बाते है। ।।२।।

ब्रम्ह ग्यान मत धार के ।। साहिब कूं गावे ।।
ज्यूं सुखदेव जम सब थके ।। अमरापुर पावे ।। ३ ।।

अरे मनुष्य,तू सतस्वरुप ब्रम्हज्ञान का मत धार और साहेब को गा। साहेब को गाने से यमराज थकेगा और तू होनकाल के परे के अमरापुर जाएगा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।३।।

३१

।। पदराग आसा ।।

बांदा आयो मोसर मती हारो

ज्यां संग हंस अगम घर पोंते ।। वे सतगुरू सिर धारो ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी तथा सभी नर–नारियों को समझा रहे कि, ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तथा इंद्रादिक देवता जिस मनुष्य तन की वंछना करते है,वह मनुष्य देह तुम सभी को मिला है। यह भारी अवसर सभी के हाथ में आया है। अब यह अवसर हारो मत याने हाथ से मत जाने दो और जिस सतगुरु के संग से हंस महासुख के अगम घर पहुँचता वह सतगुरु बिना विलंब सिर पर धारण करो। ।।टेर।।

जुग को संग सकळ दु:ख दायक ।। जा संग सुख मती जाणो ।।

सुख दायक सत संगत जग मे ।। सतगुरू सरण पिछाणो ।। १ ।।

सतगुरु छोड जगत का संग सदा दु:ख देनेवाला है,सदा सुख देने के लिए झूठा है इसलिए जगत के सुखों को सुख मत मानो। सतगुरु का संग सत है,सदा सुख देनेवाला है इसलिए जगत का संग त्यागकर संतों की सतसंगत करो। सदा सुख देनेवाले सतगुरु को पहचानो और सतगुरु का शरणा धारण करो। ।।१।।

मात पिता कुळ गोत कटुंबो ।। जुण जुण संग होई ।।

मिनषा देही गुरू ब्हो पासो ।। सतगुरू मिले हन कोई ।। २ ।।

जगत में सभी चौरासी लाख प्रकार की योनियाँ है। हर योनि में जैसे अभी माता–पिता, कुल,गोत्र साथ में है वैसे के वैसे सभी के साथ थे। जैसे आज मनुष्य देह मिला वैसे का वैसा मनुष्य देह आजदिन तक तू पकड्कर सभी को अनेक बार मिला। जैसे आज सभी को काल के देश से न निकालनेवाले गुरु मिले वैसे के वैसे गुरु हर मनुष्य देह में हर हंस को अनेक बार मिले परंतु काल से मुक्त कराकर महासुख के अगम घर पहुँचानेवाले सतगुरु आज दिनतक किसी को भी कभी नहीं मिला। ।।२।।

च्यार दिना की जोर जवानी ।। आ देखर मत फुलो ।।

आ देसी दगो इण काया ने ।। जुग जुग दु:ख संग झुलो ।। ३ ।।

यह जोर जवानी चार दिनो की है याने बहुत कम समय की है इसलिए इस जवानी के जोर पर और जवानी के सुखों पर कोई फूलो मत। यह झूठा फूलना भरत खंड में मिले हुए मनुष्य देह को भारी दगा होगा। इस जवानी के जोर पर फूलने से यह अमोलक मनुष्य देह हाथ से निकल जाएगा और इस मनुष्य तन का अंत होने पर चौरासी लाख योनियों में जाना पडेगा। वहाँ पर तैंतालीस लाख बीस हजार वर्ष तक पलपल दु:खो में झूलते

रहना पडेगा। ।।३।।

तिन लोक लग माया हे कीची ।। ओर सक्त लग भाई ।।
वाँ लग ग्यान तके सोई काचा ।। मत मानो जुग माई ।। ४ ।।

मृत्युलोक,पाताललोक,स्वर्गलोक ऐसे तीन लोक,भुर,भुवर,स्वर,महर,जन,तप,सत,तल, अतल,वितल,सुतल,तलातल,रसातल,महातल ऐसे चौदह भुवन तथा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और शक्ति की चार पुरियाँ माया का किचड है। सदा सुख न देनेवाले कच्चे माया से और सदा महादु:ख देनेवाले पक्के काल से भरे है। इस सभी लोक,भवन और पुरियों में शक्ति की पूरी सबसे बडी है। वहाँ पर भी पहुँच गए तो भी वहाँ के सुकृतों का अंत होने पर सभी को चौरासी लाख योनियों के दु:ख में आना पडता। इसलिए शक्ति लोक के सुखों तक का भी कोई गुरु संसार में ज्ञान,ध्यान,बताता है तो भी उस गुरु का कोई भी संग मत करो और उसका कोई भी ज्ञान,ध्यान मत मानो कारण वहाँ तक ज्ञान कच्चा है। ।।४।।

क्हे सुखराम मान नर मेरी ।। ने: अंछर गम लीजे ।।
फाड़र पीठ चढया गड़ ऊपर ।। ब्होर न जनम धरीजे ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी तथा सभी नर-नारियों को कह रहे है कि, माता-पिता,पत्नी,पुत्र,धन,राज से मोह निकालो,जवानी के जोर में तथा जवानी के सुखों में मत भूलो और शक्ति तक का ज्ञान बतानेवाले गुरुओंको त्यागो और सतगुरु का शरणा धारो। सतगुरु का संग करने से सदा महासुख देनेवाला और काल का महादु:ख काटनेवाला ने:अंछर की जानकारी लो। यह ने:अंछर घट मे कंठ कमल में प्रगट होगा और ने:अंछर हंस को बंकनाल के रास्ते से इक्कीस मणियों का छेदन कर काल के परे के सतस्वरुप के गढपर ले जाता जायेगा। ऐसे सतस्वरुप के गढ पर पहुँचे हुए संत फिर से चौरासी लाख योनि में कभी भी जन्म नहीं धारण करते या नहीं करेंगे और वे दिव्य देह धारण कर अगम देश के सुखों में लीन रहते रहेंगे इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज अपनी देखी हुई यह बात हरजी भाटी तथा सभी नर-नारियों को मानने को कहते हैं। ।।५।।

४५

।। पदराग आसा ।।

बांदा मत कर झोड़ अनाड़ी

बांदा मत कर झोड़ अनाड़ी ।। बार बार तूं बचन ऊथापे ।।
जम तोडे थारी जाड़ी ।। रे बांदा मत कर झोड़ अनाड़ी ।। टेर ।।

बांदा,अरे अनाड़ी,तुझे सतनाम मालूम नहीं और तु काल के मुख में रखनेवाले माया के ज्ञान के आधार से मेरा सतज्ञान न समझ लेते बार-बार उथाप रहा है। यह मेरा सतज्ञान तु समझ के घट में प्रगट किया नहीं तो तु जिस मुख से मेरा सतज्ञान उथापता इस तेरे मुख का यम जांभाड याने जबडा फोडकर मुख तोड़ेगा। ।।टेर।।

सतगुरू बिना मोख नही पावे ।। सौ गुरू करो नित्त दहाड़ी ।।
ग्यान बिना सब गांगीरोळो ।। कहाँ सक्त सिव बाड़ी ।। १ ।।

सतगुरू के सिवा किसी को भी मोक्ष मिलता नहीं। यदि किसीने सतस्वरुप के गुरू छोड्के काल के मुख में रहनेवाले ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इस माया के नित्य प्रति दिन के सौ-सौ गुरू किए तो भी मोक्ष मिलेगा नहीं। सतज्ञान के सिवा सभी ज्ञान गलबला है याने मोक्ष में पहुँचानेवाला सतज्ञान नहीं ऐसे शब्द का सिर्फ शोरगुल है। सक्ति शिव की वाडी याने खेती बाडी में जैसे पूरी स्थिती में गेहूँ पकने के लिए चार महिने लगते वैसेही गेहूँ सक्ति शिव का भेदवाले गमले में आठ दिन में ही पकाते और उस गेहूँ की खीच करके खाते। ऐसे साधू ने सक्ति शिव के परचे चमत्कार भी किए तो भी उसे सतगुरु सिवा मोक्ष मिलेगा नहीं। ।।१।।

ब्रम्हा व्यास संत सब बोल्यां ।। के गया झाड़ पिछाड़ी ।।
सास ऊसास राम जप लिज्यो ।। के रहो जीभ मुख बाड़ी ।। २ ।।

ब्रम्हा ने वेदो में,वेद व्यास ने पुराणों में वैसेही संतो ने अपने बाणी में माया-ब्रम्ह का ज्ञान छोड्के और सभी ज्ञानों का विचार करके बताया की,साँस-उसाँस में रामनाम का जप किए बिना किसी को भी मोक्ष मिलेगा नहीं इसलिए अरे बांदा,यह जीभ राम राम रटने में लगा। राम राम रटने में नहीं लगायी तो सतज्ञानियों के साथ विवाद कर मत। उस जीभ को मुँह में ही बांधकर रख नहीं तो यम तेरा जांभाड याने जबड़ा तोड़ेगा। ।।२।।

झुटी गल्ला रात दिन हांको ।। जांमे गिरे गमावों ।।
राम राम निसवासूर जपरे ।। जीऊं ब्होता सुख पावो ।। ३ ।।

अरे बंदा,तू रात-दिन झूठी बातें बोलने में अनमोल मनुष्य देह गमा रहा है। इस झूठे बोलने से तेरे पर अनेक दु:ख पड़ेंगे। यह मनुष्य देह तूने रामनाम स्मरण में नित्य लगाया तो तुझे भरपूर सुख मिलेंगे। ।।३।।

धुर पंथ चलो अगम दिस भाई ।। हद ऊझड़ मत जावो ।।
आंबा काट दूर कर मूरख ।। घर बंवळया क्यूं बावो ।। ४ ।।

तू अगम देश को जानेवाला सच्चा पंथ पकड़। तू उजाड रास्ते से जा मत। उजाड रास्ते से जाने से तुझे अगम देश कभी भी मिलेगा नहीं। जैसे मुर्ख मनुष्य आम का पेड़ काट्ता और आम के पेड़ की जगह बबूल का पेड़ लगाता और आम के फल की इच्छा करता तो उस मूरख को आम का फल कैसे मिलेगा?उसी तरह अगम देश का रास्ता त्यागता और यम का रास्ता धरता तो तुझे अगम के सुख कैसे मिलेंगे?और तेरे यम के कष्ट कैसे छुटेंगे यह तू बांदा मुझे बता। ।।४।।

चेतन अजब बणाया देवळ ।। वांकी कळा पिछाणी ।।
जिण आधार रात दिन बोलों ।। सो देवत सत्त जाणो ।। ५ ।।

जिस परमात्मा ने तुझे यह अजब देवल बना दिया है उसकी कला पहचान। ऐसे जिस चैतन्य के आधार से तू रात-दिन बोलता,फिरता,चलता,देखता वह चेतन सत्त देवत है यह समझ। ।।५।।

सब को हेत झुट हे भाई ।। संग न चाले कोई ।।
ऊलटो नांव भुलावे तोने ।। करम बंधे सिर तोई ।। ६ ।।

इस सत्तदेवता के प्रीति सिवा अन्य देवता से प्रीति करना झूठ है। यह अन्य देवता तेरे अंतकाल में तेरे साथ एक भी चलेंगे नहीं। यह अन्य देवता के गुरु,साधू तूझे भ्रम में डालके तू धारण किया हुआ सतज्ञान भुलाएँगे। गुरु,साधू,सिध्द,पीरो का संग करने से तेरे सिरपर काल के नगरी में ले जानेवाले कर्म जखडेंगे। ।। ६ ।।

ने: अंछर ओ नाँव ज गावे ।। सो साहेब का होई ।।
ओर नाँव माया का सब ही ।। ज्यां सें पचो न कोई ।। ७ ।।

ने:अंछर याने बावन अक्षरो के परे का नाम। यह नाम साहब का है। इस ने:अंछर नाम के सिवा सभी नाम माया के है। उन नामों में कोई भी पचो मत उन नामो से मोक्ष कभी मिलेगा नहीं। ।।७।।

सतगुरू हेत जक्त मे साचो ।। गोत हेत सब झुटो ।।
सतगुरू भेद मोख को देवे ।। कुळ पाड़े तोइ पुठो ।। ८ ।।

सतगुरू से प्रेम करना सच्चा और बडे मुनाफे का है। यह सतगुरू मोक्ष का भेद देकर जीव को मोक्ष पद देते। कुल,गोत्र इन से प्रेम करना झूठा है बडे घाटे का है। ये कुल,गोत्र के मनुष्य तुझे मोक्ष में जाते वक्त रास्ते में गिरायेंगे और यम के दरबार में पलटकर भेजेंगे।।८।

साध संत की सेवा किजे ।। जो जन पुंता होई ।।
ओर भेष सब जक्त बराबर ।। जाँ सूं मोख न कोई ।। ९ ।।

जो साधू संत मोक्ष में पहुँचे उन संतो की सेवा करो याने उन संतो ने जिस ने:अंछर की भक्ति अपने घट में प्रगट की है,वह भक्ति धारण करो। जिन-जिन साधू संतो में ने:अंछर नहीं ऐसे भेष धारण किए हुए सभी साधू त्यागो। यह साधू मोक्ष मिलाने के लिए जगत के मनुष्य सरीखे ही है,इनके संग मोक्ष मिलेगा नहीं। ।।९।।

धक धक सब नार नराँ कूं ।। कहा कहूँ तुज ताँई ।।
जो रस भोग पोंचावे पाँचूं ।। सो सिंवरो क्यूं नाँही ।। १० ।।

जगत के सभी नर-नारीयों को धिक्कार है,धिक्कार है। यह जो सभी को पाँचों तरह के भोग रस पहुँचाता। उसका स्मरण करते नहीं और जो यम के मुख में, दु:ख में डालता उसे दौड-दौड के पुजते ये क्या बताऊ तुझे। ।। १० ।।

के सुखराम सुणो सब कोई ।। ओ मोसर नही पावो ।।
आणंद लोक चालो नर नारी ।। सो मेरे संग आवो ।। ११ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज सभी नर-नारी कहते है कि, यह मनुष्य देह का और मनुष्य देह के साथ ही सतगुरू मिलने का प्रसंग बार-बार मिलता नहीं। यदी तुम्हें आनन्द लोक में चलना है तो तुम सभी मेरे साथ आओ। || ११ ||

५८

|| पदराग सोरठ ||

बंदा और सकळ सब शोभा

बंदा और सकळ सब सोभा ||

सीव मांय होय नदी जात हे || को किस का जळ जोबा || टेर ||

अरे बंदा,सतनाम सिवा मोक्ष को जाने के लिए दुजी माया की सभी बातें जगत में शोभा है। प्यास लगी है और अपने गाँव के शिवाडी में से ही पानी से भरी हुई नदी बह रही है फिर अब पानी के लिए दुजी नदी क्यों खोजते?ऐसे ही मोक्ष देनेवाला सतनाम याने सतगुरु मिले है फिर मोक्ष मिलाने के लिए दुसरा ज्ञान क्यों खोजते? || टेर ||

धरम पुनं जा को सुण सत्त हे || तन में मन कर देवे ||

चित मन सुरत प्राण पे थोभे || नाँव सत सो लेवे || १ ||

धर्म,पुण्य करना उसका सत्य है और जो तन से मन से धर्म,पुण्य करता। जो जगत को दिखावा करने के लिए धर्म,पुण्य करता वह धर्म,पुण्य झूठा है। जो अपना चित्त,मन,सुरत और प्राण एक जगह करके सत्त नाम लेता उसका ही सत्त नाम लेना मोक्ष पहुँचाने के लिए सच्चा है। || १ ||

जोगी सोइ प्राण मन जीते || उलट गिगन चढ जावे ||

जती साचा सोई जन कहिये || काम उतर नही पावे || २ ||

जोगी वही सत्य है,जो प्राण को और मन को जीतता याने अपने प्राण और मन को विषय वासना में जाने देता नहीं और विज्ञान वैराग्य को प्रगट करके घट में बंकनाल के रास्ते से उलटकर ब्रम्हंड गिगन में चढ जाता। जती सच्चा वही जिसका कोई विषय वासना के स्थिती में काम शरीर में से उतरता नहीं। || २ ||

अणभे सत्त जहां भव नाही || ओर सकल हे कहणी ||

के सुखराम सिष हे साचा || गुरू सबद पर रहणी || ३ ||

सच्चा अणभय वही है,जिसे काल का थोडा भी भय नहीं बाकी के अणभय यदि कहते होंगे तो भी उन्हें कही ना कही काल का भय है। उनका यह अणभय शब्द में बताने पुरता है। आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते,वही शिष्य सच्चा जो गुरु जैसा बताते वैसा रहते। जो शिष्य गुरु कहते वैसा रहते नहीं वे शोभा पुरते गुरु के शिष्य हैं। || ३ ||

७४

|| पदराग धनाश्री ||

बेमुख सोई जाणिये रे

बेमुख सोई जाणिये रे || हर हूकम मेटे कोय ||

भक्त बिसारी राम की रे ।। माया सूं मन गोय ।। टेर ।।

जो नर–नारी हर का हुकुम मिटाते,रामजी का आदेश नकारते,रामजी की भक्ति भूल जाते ,करते नहीं,माया के सुखों मे मन लगाते और दु:ख पडने पर रामजी को कोसते वे नर–नारी रामजी से बेमुख है,यह जानो। ।।।टेर।।

जायो जब नर हरकियो रे ।। किया मंगळ जोग ।।
मुवां सूं रूना धाहा दे रे ।। कर बेठा नर सोग ।। १ ।।

जब घर में पुत्र जन्मा था तब हर्षित होकर गाँवभर मिठाई बाटी,बाजे बजाए तथा अनेक प्रकार के मांगलिक उत्सव किए और वही बेटा जब मर गया तब धाय ठोककर रोने लगा मन से अती दु:खीत होकर दु:ख करने लगा। ।।१।।

ब्यांव भयो जब फूलियो रे ।। घर घर बनडा गवाय ।।
नार चली हर हुकम सूं रे ।। रोवे अन्न न खाय ।। २ ।।

जब शादी हुई तब मन में फूले नहीं समाता था। आनंद से शादी के समय घर–घर बिदोली निकाली वही पत्नी हर हुकुम से चल बसी,मर गई तो धाय ठोककर रोता रहा और दु:ख मानकर रोटी भी नहीं खाता था मतलब रामजी ने जो किया वह तुझे पसंद नहीं ऐसा तू रामजी से बेमुख रहा।।२।।

माया आई तां दिना रे ।। आणंद अंग अपार ।।
पाछी साहेब मांगिया रे ।। रोवो घर घर बार ।। ३ ।।

जिस दिन रामजी ने धन दिया उस दिन मन में अपार आनंद किया और वही माया साहेब ने वापस माँग ली तो घर–घर रोता फिरा मतलब रामजी ने जो किया उसका आदर न करते और रामजी से मुँह फेरकर बैठ गया।।३।।

राज दियो हर गेब सूं रे ।। बोहो सुख मान्या आण ।।
अेक दिना हर हार करी रे ।। तब छाडे तन प्राण ।। ४ ।।

रामजी ने अचानक राज दिया तब मन में बहुत सुख माना और वही राज एक दिन लढाई में हराकर वापिस लिया तो प्राण त्यागने को तयार हो गया मतलब रामजी ने किया वह पसंद नहीं आया ऐसा तू सदा रामजी से बेमुख रहा। ।।४।।

के सुखदेव सब सांभळो रे ।। नर नारी सब लोय ।।
सुख सोच सूं हर दुखी रे ।। हंसा मुक्त न होय ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,तुम सभी स्त्री–पुरुष सुनो,तुम तुम्हारे पर दु:ख पडने पर दु:खी होते हो,दु:ख की चिंता फिकीर करते हो,रामजी की भक्ति भुल जाते हो,उलटा रामजी को कोसते हो,रामजी ने दिये हुए हुकुम मेटते हो और माया के सुखों में मन लगाते हो,माया के सुखों की चाहना करते हो,इस तुम्हारे बेमुख स्वभाव से रामजी दु:खी होते है। ऐसे बेमुख स्वभाववाले हंसों को रामजी परममुक्ति में कैसे ले जाएँगे ऐसा

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।५।।

८०

।। पदराग मारू ।।

भजो तो राम भजी ज्यो रे

भजो तो राम भजी ज्यो रे ।। हरि बिन दूर तजी ज्यो रे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी नर–नारी को कह रहे है की,भजन करना है तो राम नाम का भजन करो याने भक्ति करना है तो राम नाम की भक्ति करो। रामनाम सिवा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इनसे उपजी हुई सभी भक्तियों से दूर होकर त्याग दो। ।।टेर।।

जो बोले तो राम कहे रे ।। नीतर चुपक संभाय ।।

राम भजन बिन प्राणिया रे ।। बंध्यो जम पुर जाय ।। १ ।।

यदि बोलना है तो केवल राम बोलो केवल नाम सिवा अन्य देवताओं का नाम मत बोलो। यदि केवल नाम नहीं बोलना है तो चुप रहो। राम भजन के बिना अन्य देवताओं का नाम जपने से प्राणी के सिरपर कर्म बंधते और वे कर्म भोगवाने के लिए प्राणी को जम जमपुरी ले जाता है। ।।१।।

संगत करे तो साध की रे ।। नीतर रहिये अेक ।।

सागट सुं मुख बोलता रे ।। क्रोध बधे ऊर धेक ।। २ ।।

संगत करनी है तो केवली साधू की करो। साधू की संगत नहीं मिलती है तो अकेले रहो। रामजी से अप्रीति करनेवाले सागट की संगत कभी मत करो। सागट संग करने से घट में क्रोध और द्वेष बढ्ता है ।।२।।

सिंवरण करे तो श्याम को रे ।। केवळ ब्रम्ह बिचार ।।

के सुखदेव नहि तो युँ ही भलारे ।। सब बिध माथे मार ।। ३ ।।

स्मरण करना है तो स्वामी का स्मरण करो। कैवल्य ब्रम्ह का स्मरण करो। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,स्वामी याने कैवल्यब्रम्ह छोड्कर अन्य किसी देवता का स्मरण मत करो। अन्य देवता के स्मरण किए बिना रहना यह उन देवताओं के स्मरण करने से अच्छा है। कैवल्य रामजी की विधि छोड्कर दूसरी सभी विधियाँ प्राणी के सिर के उपर मार है। दुसरी विधियों से प्राणी के सिरपर कर्म लगते और वे कर्म भुगताने के लिए जम जमपुरी ले जाता ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।३।।

८१

।। पदराग मारू ।।

भजो तो राम भजी ज्यो रे

भजो तो राम भजी ज्यो रे ।। हरि बिन दुर तजी ज्यो रे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी नर–नारी को कह रहे है की,भजन करना है तो रामनाम का भजन करो याने भक्ति करना है तो रामनाम की

भक्ति करो। रामनाम सिवा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इनसे उपजी हुई सभी भक्तियों से दूर होकर त्याग दो। ।।टेर।।

षटक्रिया आचार लेहेरे ।। नाम समो नहि कोय ।।
कळजुग मे फळ ना लगे रे ।। नाव बिना धर्म सोय ।। १ ।।

नेती,धोती,नौली,बस्ती,कपाली,त्राकट ये सभी छःक्रिया और सभी आचार करना कैवल्य राम के भजन बराबर नहीं है। इस कलियुग में केवल नाम के सिवा अन्य किसी धर्म को सुख के फल नहीं लगते। ।।१।।

जत्त सत्त त्याग मुनिसरा रे ।। तपस्या जोग कुवाय ।।
नांव समान को नहि रे ।। सब धरम से जुग माय ।। २ ।।

जत रखना,सत पालना,त्याग करना,मौन रखना याने सालो गिनती किसीसे कुछ बोलता नहीं,तपस्या करना,हटयोग साधना,सांख्ययोग साधना तथा जगत के अन्य सभी धर्म केवळ नाम के समान नहीं है। ।।२।।

कासी करवत झाँप ले रे ।। अन तज जे फळ खाय ।।
नांव समाना को नही रे ।। अभे दान जग मांय ।। ३ ।।

काशी में जाकर करवत लेना,भेरु झाँप लेना,अन्न त्यागकर सिर्फ दुध पिकर पेट भरना, अभय दान देना आदि सुख मिलने के लिए एक भी केवल नाम समान नहीं है। ।।३।।

सब ध्रम को फळ लागतो रे ।। तीन जुगा के मांय ।।
कळजुग में सुखराम केहे रे ।। हर बिन निर फळ थाय ।। ४ ।।

ये सभी धर्मो का फल सतयुग,त्रेतायुग,द्वापारयुग में लगते थे परंतु इस कलियुग में इन धर्मो में से एक को भी फल नहीं लगता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि, कलियुग में सिर्फ रामजी के भक्ति को फल लगता बाकी सभी धर्म निर्फल रहते। ।।४।।

८२

।। पदराग मारू ।।

भजो तो राम भजी ज्यो रे
भजो तो राम भजी ज्यो रे ।। हरि बिन आन तजी ज्यो रे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी नर–नारी को कह रहे है कि भजन करना है तो रामनाम का भजन करो याने भक्ति करना है तो रामनाम की भक्ति करो। रामनाम सिवा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इनसे उपजी हुई सभी भक्तियों से दूर होकर त्याग दो। ।।टेर।।

सतजुग मे सत्त राखता रे ।। अबे निभे नहि कोय ।।
जे कोई नर हटकर करेरे ।। च्यार दिना लग होय ।। १ ।।

सतयुग में सत रखते थे याने कोई कुछ माँगे तो वह वस्तु उसे दे देते थे परन्तु कलियुग में यह सत रखना निभता नहीं है। कोई सत्त निभाने के लिए हट करेगा तो चार दिन के

लिए सत निभेगा अंतिम तक नहीं निभेगा। इसलिए कलियुग में सतयुग के समान सत्त का फल नहीं लग सकता। ।।१।।

(टिप:–सतयुग में दान देनेवाले अनंत थे और दान लेनेवाले बिरले थे इसलिए अंतिम तक उससे सत निभता था परंतु कलियुग में यह सत रखना अंतिम तक निभता नहीं क्योंकी दान लेनेवाले अनंत है तो दान देनेवाले बिरले है।)

तप त्रेता मे ताप तारे ।। सकळ ब्रछ फळ खाय ।।
कळ युग मे अब ना निभे रे ।। दुनियाँ सुं जुध थाय ।। २ ।।

त्रेतायुग में तपस्या करने के लिए अन्न त्यागकर पहाड में जाकर मन और तन को ताप देते थे। वहाँ पेट भरने के लिए पेडों से उपजनेवाले कंद मूल और फल खाते थे अब कलयुग में यह नहीं निभता। कलयुग में पहाड पर जाकर कोई तपस्या करेने के लिए पेड के कंद मूल और फल खाएगा तो उसके साथ सरकार झगडा करती और तपस्वी भूखा रहता अन्तिम में बार–बार पेट भरने के लिए झगडा करने से तपस्या करना छोड देता। इसप्रकार कलियुग में त्रेतायुग समान तपस्या का फल नहीं लगता। ।।२।।

द्वापुर मे सत्त न्हावणो रे ।। क्रिया सब सुध होय ।।
कळ जुग मे अब ना सजेरे ।। माखी लपटे लोय ।। ३ ।।

द्वापर में नहाना,धोना और न्हाने,धोने से बनी हुई सभी क्रियाएँ शुध्दता के साथ साधे जाती थी। अब कलियुग में नहाने,धोने की सभी क्रियाएँ अपवित्र बनती। गंगा,यमुना समान छोटे से बडी नदियाँ,तालाब आदि तट्टी,पेशाब कारखानों के प्रदुषित पानी से अपवित्र हो गई। ऐसे अपवित्र पानी से नहाने से,नहाने,धोने की साधनायें फलहिन बनती। इतने उपर किसी ने पवित्र जल से नहा भी लिया तो भी नहाने के बाद मांस,मच्छी पर,मरे हुए प्राणी पर,पेशाब तट्टी में रमी हुई मक्खीयाँ साधक के शरीर पर रमती। साधक ने शुध्दता से किए हुए भोजन प्रसाद पर ये मक्खियाँ बैठकर भ्रष्ट कर देती इसलिए द्वापार युग में नहाने,धोने का फल पाने के लिए जैसा सत था वैसा कलयुग में नहीं है। ।।३।।

कळ जुग जांजळी मान हे रे ।। दीया धरम सब छेद ।।
नाँव निकेवळ ब्रम्ह को रे ।। सदा उत्तम पद भेद ।। ४ ।।

यह कलियुग जांजळीमान है। इस कलियुग ने केवल नाम का फल छोड्कर अन्य सभी धर्म के फल नष्ट कर दिए है। इस कलियुग में निकेवल ब्रम्ह के नाम का भेद यही सदा महासुख देनेवाला उत्तम भेद है। ।।४।।

साची कह सुखरामजी रे ।। कळजुग सिंवरण सार ।।
ओर धरम सो ना सजे रे ।। ना फळ लागण हार ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञानियों को कहते है की,मै सत्य कह रहा हूँ,सुख पाने के लिए कलियुग में केवल नाम का स्मरण करना यही सार है। कलियुग में सुख पाने के

लिए अन्य सभी धर्म सजते भी नहीं है और अपूर्ण धर्म सजने कारण उन धर्मो के सुख के फल लगते भी नहीं। ।।५।।

८३

।। पदराग मारू ।।

भजो तो राम भजी ज्यो रे

भजो तो राम भजी ज्यो रे ।। हरि बिन आन तजी ज्यो रे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी नर–नारी को कह रहे है कि ,भजन करना है तो रामनाम का भजन करो याने भक्ति करना है तो राम नाम की भक्ति करो। राम नाम सिवा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इनसे उपजी हुई सभी भक्तियों से दूर होकर त्याग दो। ।।टेर।।

केवळ भजिया मोख हुवे रे ।। करम कीट सब जाय ।।

आवागवण न ओतरे रे ।। तुम मिलो परमपद माय ।। १ ।।

कैवल्य रामनाम का भजन करने से मोक्ष होता याने काल के दु:ख देनेवाले सभी कर्मरुपी किट छुट जाते है और जीव का आवागमन मिट जाता,जीव महासुख के परमपद में मिल जाता। वह जीव फिर काल के आवागमन के चक्कर में नहीं पडता ।।१।।

कळजुग सत नाम हे रे ।। आन धरम सब झूठ ।।

तप त्रेतां सुं थाकिया रे ।। गया ब्रिछ फळ ऊठ ।। २ ।।

कलियुग में सिर्फ केवल नाम की भक्ति ही सत याने फलवान है।केवल नाम छोड्के अन्य सभी भक्तियाँ उध्दार होने के लिए झुठ है।त्रेतायुग में तपेश्वरी को तप का फल लगता था। ये तपेश्वरी पहाडों में जाकर अनाज त्याग करके वृक्ष के फल ग्रहण करके पाँचो इंद्रियो को तपाते थे,परंतु द्वापार से तपेश्वरी वृक्ष के फलफूल खाकर तप पूर्ण नहीं कर सकते। तपेश्वरी को वृक्ष के फल न खाने मिलने के कारण कई बार भूखे रहना पडता जिससे तपेश्वरी तप अधुरा छोड देते थे। इसीकारण तपेश्वरी को त्रेता के बाद तप का फल नहीं मिल पाता था। इसप्रकार से त्रेतायुग में तप के फल थक गए। इसलिए कलियुग में कोई कितना भी कष्ट लेकर तप करना चाहते हो तो भी उसका तप पूर्ण नहीं हो सकता और उसका तप अपूर्ण होने कारण उसे तप का फल भी नहीं लगता। ।।२।।

केवळ हर अराधिया रे ।। जीव सीव होय जाय ।।

पूरण पद परमात्मा सो ।। आपो आप कहाय ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,केवल हर की आराधना करने से जीव का सीव याने परमात्मा हो जाता और जीव पूर्ण पद का जो परमात्मा है वैसा अपने आप सर्व सुख का कर्ता परमात्मा बन जाता फिर उसे सुख माँगने के लिए किसीके पास हाथ नहीं पसारना पडता। ।।३।।

आन धरम से बंध हे रे ।। छूट सके नहि कोय ।।

जनम धरे जुग केतला रे ।। पसवा पंखी होय ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,पूर्णपद परमात्मा का धर्म छोड के अन्य सभी धर्म जीव को आवागमन के मुख में ही रखने के बंधन है। अन्य किसी भी धर्म से जीव आवागमन के चपेट से छुट नहीं सकता। अभी तक जैसे चौरासी लाख योनि के पशुपक्षी के कई योनियों में दु:ख भोगने जन्मना पडा वैसे के वैसे फिरसे अन्य धर्म साधन से पशुपक्षियों के समान कई योनियों में दु:ख भोगने जन्मना पडता। ।।४।।

साची कहे सुखरामजी रे ।। सुणियो ग्यानी आय ।।
केवळ हर बिन भ्रम हे रे ।। लख चोरांसी जाय ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञानियों को कहते है कि,मैं सत्य कह रहा हूँ। ये मेरे शब्द सभी ज्ञानियों सुनो,केवल राम सिवा अन्य सभी धर्म चौरासी लाख योनि का आवागमन का फेरा मिटाने के लिए भ्रम है,झूठे है इसलिए अन्य धर्म साधने के पश्चात भी जीव चौरासी लाख योनि में जाता है,चौरासी लाख योनि से मुक्त नहीं होता है। ।।५।।

८४

|| पदराग मारू ||

भजो तो राम भजी ज्यो रे
भजो तो राम भजी ज्यो रे ।। हर बिन दूर तजी ज्यो रे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी नर–नारी को कह रहे है की,भजन करना है तो रामनाम का भजन करो याने भक्ति करना है तो रामनाम की करो। रामनाम सिवा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इनसे उपजी हुई सभी भक्तियों से दूर होक र त्याग दो। ।।टेर।

मून गहे तो आन सूं रे ।। हर सुं बोल अघाय ।।
मारीजे तो मन कूं प्राणी ।। जीव की करले साय ।। १ ।।

यदि तुम्हे मौन धारण करना है याने भक्ति नहीं करना है तो तुम रामजी छोड्कर अन्य सभी भक्तियाँ मत करो परंतु रामजी से पेटभर बोलो याने रामजी की पेटभर भक्ति करो। यदि तुम्हे किसी को मारना है तो विषय विकारो में फँसानेवाले तुम्हारे मन को मारो, निरअपराधी प्राणियों को मत मारो। निरअपराधी जीव सुख में रह सकेंगे ऐसी उनकी सहायता करो। ।।१।।

दिजे तो अन दान कूं रे ।। लीजे सो हर नांव ।।
तजिये सो पर तात कूं रे ।। करिये सो पर काम ।। २ ।।

यदि तुम्हें दान देना है तो जो साहेब के स्वभाव के शुभ कर्मी है और भूखे है उन्हें साहेब का जीव पकड्कर प्रेमप्रित से अन्नदान दो।(जो काल के स्वभाव के कुकर्मी है उसे सपने में भी अन्नदान मत दो)यदि तुम्हें लेना है तो सतगुरु से हरनाम लेने की विधि लेकर प्रेमप्रित से हरनाम लो। यदि तुम्हें छोडना है तो साहेब से प्रेमप्रित करनेवाले तथा

निरअपराधी प्राणियों के गले को लगी हुई दु:ख की फाँसी छोडो और कोई काम करना है तो दुसरो को सतगुरु का ज्ञान समझाकर काल से छुड्वाने का काम करो। ।।२।।

पत राखो तो नाव सूरे ।। दूजा सेज सभाव ।।
अग्या गुरू की मानिये रे ।। ओर तजो बिष खाय ।। ३ ।।

यदि तुम्हें पत याने कड्कपणा रखना है तो नाम भजने में रखो और अन्य संसार के सभी काम हुए ठीक,नहीं हुए ठीक ऐसे सहज स्वभाव के रखो। यदि तुम्हें आज्ञा मानना है तो परमसुख में पहुँचानेवाले सतगुरु की मानो और छोड्ना है तो विषय विकार खाना छोडो। ।।३।।

त्यागी जे तो भरम कूं रे ।। में ते दुबद्या चाय ।।
जे तज सब सुख प्राणियारे ।। जां संग नरका जाय ।। ४ ।।

यदि तुम्हें त्यागना है तो वेद,व्याकरण,शास्त्र आदि भ्रम उपजानेवाले मायावी ज्ञान और करणियाँ त्यागो,विकारी माया से उपजनेवाली मैं और तू ऐसी दुबध्या याने विषम भाव त्यागो और विषय विकारी माया के सुखों की चाहना त्यागो। जिस-जिस विकारी विषयों के सुख से प्राणी नरक में जाता वे सभी विधियाँ त्यागो। ।।४।।

भेद लहे तो तत्त का रे ।। आतम खोज बिचार ।।
केहे साची सुखदेव जी रे ।। ओर बिद्या सिर मार ।। ५ ।।

यदि भेद लेना है तो आत्मा में सुख देनेवाला परमात्मा तत्त कैसे ओतप्रोत है यह खोजो और उसे धारण करो। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं सत्य बोल रहा हूँ सुख देनेवाले तत्व के विधि सिवा सभी विकारी,मायावी विधियाँ जीव के मस्तक पर भारी मार है। ।।५।।

९५

।। पदराग मस्त ।।

छोगाळा नर रे

छोगाळा नर रे ।। तुं तो जम जालम सूं डर रे ।।
तूं तो कयो हमारो कर रे ।। तुं तो ध्यान धणी को धर रे ।। टेर ।।

अरे अलमस्त मनुष्य,तू जालीम यम से डर। तू मेरा धनी का ध्यान करने का कहना मान और रामजी का ध्यान कर। ।।टेर।।

जब तन आण पडेला घेरा ।। नव दरवाजा जम का डेरा ।।
वाँ रंज गेल मिले नही सेरा ।। रे तूं तो वा दिन को भै कर रे ।। १ ।।

अंतिम समय पर तुझे यम घेरेगा और तू भाग कर यमो के हाथ से छूट नहीं जावे इसलिए तेरे शरीर के नौ दरवाजो पर यम अपने फौज के डेरे डालेगा। वहाँ से तेरे भागने के लिए यम रजमात्र भी गल्ली नहीं छोडेगा ऐसा कठीण समय तुझपर आएगा इसलिए अरे जीव,तू उस अंत दिन का भय कर। ।।१।।

जो जो करम कियां तें भाई ।। से सब लिखियां कागदां माई ।।
अण भोळे कोई अेको ना जाई ।। रे मन तिल तिल लेखो कर रे ।। २ ।।

तूने जो जो कर्म किये वे सभी कर्म चित्र–गुप्त ने तेरे कर्मो के बहीखाते में लिखे है। तूने जानकर किए या भोलेपन में किए वे कर्म यम माफ नहीं करता। अरे मूर्ख जीव,धर्मराय के दरबार में तिल तिल का हिसाब होता। ।।२।।

केहे केहे मार दिरावे सोई ।। ज्यूं लो ताव दिरावे लोई ।।
ये सब काम तुमारा होई ।। रे नर वाँ दिन बोहो दु:ख पड़े रे ।। ३ ।।

धर्मराय के दरबार में तुझे जता जताकर मार देंगे। जैसे तपाये हुए लोहे पर पांचाल कहाँ कहाँ मार देना यह दिखाता वैसे कर्मो को देख देख कर यमराय,यमदूतों से मार दिलवाता। ये मार खाने का कारण तुम्हारे किए हुए कर्म रहते इसलिए अरे मनुष्य,अंत में जो भारी दु:ख पडेंगे उसकी आज ही सोच कर और वे दु:ख नहीं पडे इसलिए धनी का ध्यान कर। ।।३।।

के सुखराम सुणो नर आई ।। जम की झाँट बूरी रे भाई ।।
चूँट चूँट डाकी ज्यूं खाई ।। रे नर समजर राम सिमर रे ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अरे जीव,यम की झपट बहुत बुरी है। यह यम डाकी जैसा जीव को खाता वैसा तोड तोड कर खाता। अरे नर,तू ये दु:ख समझ और समझकर राम नाम का स्मरण कर। ।।४।।

९७

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

देखो रे देखो साधो मत्त जक्त की
देखो रे देखो साधो मत्त जक्त की ।। हर कूं जाणे भोळा बे ।।
लल फल कर के रीजायर लेवे ।। अेसा हे ग्यानी गोला बे ।। टेर ।।

सभी साधुओं,जगत की मती देखो,जो घट में रामजी प्राप्त करा देते ऐसे हर याने सतगुरु को ज्ञानी,ध्यानी भोले जानते। सतगुरु रुठ गए तो रामजी रुठते यह जरासा भी डर मन में नहीं रखते। ज्ञानी सतगुरु को तन,मन न देते बिना तथ्य की चोपडी–चोपडी उपर–उपर बातें करके रिझाना चाहते और घट में रामजी प्राप्त करना चाहते ऐसे ये ज्ञानी छोटे समझवाले रहते। ।।टेर।।

जुग मर्जाद न चूके तिल भर ।। तन मन जाता कोई बे ।।
भगत मांय कसर दस गाडा ।। रज भर बोज न होई बे ।। १ ।।

ये जगत के लोग जगत की मर्यादा तिलभर भी नहीं टालते पूरी तन मन लगाके पालते परंतु जिसका तन,मन,धन पर रजभर भी बोझा नहीं पडता ऐसे हर के भक्ति में दस गाडा याने बहुत कसर रखते। ।।१।।

कुळ को नाव कडायो चावे ।। ज्युं त्युं कर नर सोई बे ।।

भगत पदी कूं जुग जुग गावे ।। तां की चाय न कोई बे ।। २ ।।

कुल परिवार,गोत्र का नाम जो नहीं वह खटपट करके ऊँचा कराना चाहते परंतु भक्ति पदवी मिलने पर जगत युगान युग नाम निकालता वह चाहना जरासी भी नहीं रखते। ।२।

च्यार पाच घर क्है जो भूंडो ।। ओर सकळ जुग पूजे बे ।।
दस आतम की केबत तांई ।। प्रमपद नही सूजे बे ।। ३ ।।

संसार में सतस्वरुप भक्त को जादा में जादा भाईबंद,मामाकुल,ससुराल कुल,दामादकुल ये चार पाँच घर बुरा कहते परंतु संसार के सभी लोग पुजने लगते। ऐसे चार पाँच घर याने दस बीस आत्मा के लिए जगत के लोगो को परमपद की भक्ति सुझती नहीं। ।।३।।

के सुखराम ध्रग उण नर कूं ।। सतगुरू को डर नाही बे ।।
जिण प्रताप मीले आणंद सूं ।। सतस्वरूप के माही बे ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जगत के मनुष्य को धिक्कार है कि,जिनके प्रताप से आनंद में मिलता है,सतस्वरुप में मिलता है ऐसे सतगुरु की जरासी भी मर्यादा नहीं। ऐसे सतगुरु के रुठने से आनंदपद नहीं मिलेगा इसका डर नहीं है। ।।४।।

११०

।। पदराग बसन्त ।।

ध्रिग ध्रिग हो मन ध्रिग तोय

ध्रिग ध्रिग हो मन ध्रिग तोय ।। गुरू गम छाड़ जग बस होय ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,यह मेरे मन तुझे धिक्कार है,धिक्कार है। तु सतस्वरुप पद के गुरु का ज्ञान त्यागकर विषय विकारों के सुख के लिए निच पापी देवताओंके वश हो रहा है। ।।टेर।।

लिव भजन छाड कर कथे हें ग्यान ।। जप धरम करत नर बंछे मान ।।
हर मुख छाड़ माया मन चाय ।। तज ध्यान ठोर जुग रमण जाय ।। १ ।।

तु राम नाम से लिव लगाना त्यागकर निच पापी देवताओं के ज्ञान में लिव लगा रहा है और इनके विषय रसों के लिए जप,धर्म को मान रहा है। हर के सुख को त्यागकर मन के विषय विकार कि चाहणा के कारण झुठे राक्षसी माया के क्रिया करणीयों में लग रहा है। रामजी का ध्यान त्यागकर जगत में भेरु,भोपा,खंडोबा,पिरोबा में रमने जाता है। ।।१।।

अष्ट पोहोर रट राम राय ।। पल निमख अेक नहिं ढील खाय ।।
सुण अेक लेस उर माँहि जाण ।। जुग जुग पूज सो मोहि आण ।। २ ।।

अरे जीव,अष्टोप्रहर रामनाम रट एक पल भी भेरु,भोपा इन पाप कर्मी देवो में गमा मत। जुगान जुग से जिस रामजी को संत पुजते आए है उस रामजी को हृदय में धारण कर और उसके साथ एक लेस हो जा,घुल जा। ।।२।।

देह भाँग भख भूर कीन ।। सब सुख छाड़ कर भयो हे लीन ।।
सुण अेक पंथ उर अरथ चाय ।। फिट भगत बीच आ रहो संभाय ।। ३ ।।

जैसे राक्षसी देवताओं के सामने निरअपराधी प्राणी को भांगता है वैसे तेरे विषय विकारो के देह को भांग के नाश कर। ये सभी विकारो के सुख त्यागकर अपने निर्मल देह से रामजी में लीन हो जा और सुन,इसी रामजी के एक पंथ की चाहत रख। तुझे धिक्कार है,तु विषय विकारो के सुख पाने के लिए भक्ति में प्राणीयों के बली देता है,भक्ष्य देता है और नरक के पाप कमाता है यह निच भक्तियाँ त्याग और रामजी के भक्ति को धारण कर। ।।३।।

धिग धिग हो सुण मत तोय ।। गुरूदेव छाड़ शिष बस होय ।।
के सुखराम कजी सो काढ ।। कसरकोर नो शीश वाढ ।। ४ ।।

ऐसे तेरे पाप भक्ति धारण करनेवाले मत को धिक्कार है,धिक्कार है। तू गुरुदेव त्याग देता और अपना शिष्य पाप देवताओं के बस करता है ऐसे तेरे मत को धिक्कार है, धिक्कार है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,तु तेरी यह जबरी कसर निकाल दे। इस जबरी कसर कोर का जैसे प्राणीयों के शिर काटता ऐसे प्राणीयों के शिर न काटते कसर कोर का शिर काट दे और रामजी के पंथ में लग जा। ।।४।।

१२०

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

अेक मना सिध अेक मना सिध
अेक मना सिध अेक मना सिध ।। दुबध्या पार न पूँचे बे ।। टेर ।।

सतशब्द को मनाओं। सतशब्द मनाने मे दुविधा मत रखो। उसे मनाने मे दुबधा रखने से तुम भवसागर के पार नहीं पहुँचोगे। सतशब्द में संसार के सभी धर्म के फल अपने आप से लग जाते यह जान के एक सतशब्द को मनाओ। ।।टेर।।

सत्त शब्द तत जाणर लीजे ।। सब धरम ईण मे आवे बे ।।
हर गुरू अेक मेट युँ दुबध्या ।। यूँ साहेब सब पावे बे ।। १ ।।

सतगुरु और साहेब ये दो है यह दुबधा मिटावो तथा सतगुरु और साहेब एक है यह सतज्ञान से समझकर सतगुरु के शरण जाओ,साहेब घट में पावो। सभी धर्म सतशब्द में आते ऐसा यह सभी धर्म का तत्त याने सार है यह जानकर सतशब्द लो। ।।१।।

दुरजोजन कूं नरका डाऱ्यो ।। अेसा करम कमाया बे ।।
अेक मने सुण बाहिर काढयो ।। साहिब दर्शन पाया बे ।। २ ।।

दुर्योधन कुंडी कपटी था,उसने नरकीय कर्म किए थे,जिसकारण दुर्योधन नरक में पडा। उसी दुर्योधन की युधिष्ठिर को दया आयी इसलिए युधिष्ठिर ने दुर्योधन को नरक के बाहर निकाला। दुर्योधन के मन में युधिष्ठिर को सतवादी दयालू मानने की दुविधा थी परन्तु जब दुर्योधन नरक के कष्ट से बाहर निकला और दुर्योधन के दु:ख मिटे तब दुर्योधन ने युधिष्ठिर में साहेब देखा। ।।२।।

के सुखराम भगत हल कीज्यो ।। अेक मनावे भाई बे ।।

कूड़ कपट छाड सब दुबध्या ।। रहो राम लिव लाई बे ।। ३ ।।

इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अपने उर से कुडा,कपट त्याग करो और सतगुरु को साहेब न मानने की दुबधा मिटाओ,साहेब और सतगुरु एक है समझकर सतगुरु को मनाओ। रामनाम छोड बाकी सभी धर्म त्याग दो और जल्दी से रामनाम की भक्ति करो और रामजी से लिव लगा कर रहो। ।।३।।

१२२

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

फिट मन फिट लाणत तो ने

फिट मन फिट लाणत तो ने ।। उबरती फिट माने रे लो ।। टेर ।।

अरे मन,तुझे धिक्कार है,तुझे लाणत है। तुम्हारी तरफ से निकली हुई सभी बातों से मेरी तरफ से तुझे अधिक से अधिक धिक्कार है। ।।टेर।।

भगत मुगत सा गेला छाड़े ।। जम की राह बुवारे रे ।।

हर की कथा सुणे नहिं कानाँ ।। आन बिना नहि सरे रे लो ।। १ ।।

अरे मन,तू परममुक्ति और भक्ति का रास्ता त्यागता है और यम के देश जानेवाला रास्ता बनाता है। अरे मन,परममुक्ति देनेवाले रामजी की कथा तू कानों से सुनता नहीं और यम के देश में ढकेलनेवाले देवताओं की कथा सुने बिना तेरा बनता नहीं। ।।१।।

जिण तेरा अे देवळ कीया ।। नख चख सबे बिणावे रे ।।

केवळ राम रिजक का दाता ।। ताँ कूं कदे नहि गावे रे लो ।। २ ।।

जिसने तेरा यह मनुष्य देवल बनाया,नाखून से आँखों तक सुपंग बनाया,जरासा भी अपंग नहीं रहने दिया और समय समय पर तुझे रोटी दी ऐसे केवल राम को कभी नहीं गाता और अन्य देवताओं को जिसने तुझे ना तो मनुष्य देह दिया ना तो रोटी दी है उसे भाग भाग कर भजता है ऐसे तेरे मूर्खता को धिक्कार है,धिक्कार है। ।।२।।

पकड़े हे झूठ साँच कूं छोडे रे ।। बिष ले इम्रत मेले रे ।।

हर चर्चा साधु जन लोपे ।। जायर होळी खेले रे लो ।। ३ ।।

तु भेरु,भोपा,सितला,दुर्गा,खेतपाल,खंडोबा,पिरोबा,मोगा,पित्तर आदि नरक में ढकेलनेवाले देवताओं को पकड्ता है और सच्चे केवल रामको त्यागता है। तू विषय जहर पीता है और अमृत रुपी केवल राम भजना त्यागता है। तू हर चर्चा करनेवाले साधू जनोसे छुपता है और जहाँ भांग समान चीजें पीते है ऐसे होली में होली खेलने जाता है। ।।३।।

के सुखराम ध्रग तोय प्राणी ।। आतम देव न जाणे रे ।।

ज्याँ संग होय पडेगा नरकाँ ।। वाँ कूं बोहोत बखाणे रे लो ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले,अरे प्राणी,तुझे धिक्कार है। अरे जीव,तू आत्मा का जो देव है उसे समझता नहीं और विषयों मे मगन हुआवा मन जिसे देवता मानता उसे जाकर पुजता। उसके संग तू नरक में पडेगा फिर भी उसकी तरह तरह से बहुत महिमा

करता इसलिए अरे जीव,तुझे धिक्कार है,धिक्कार है। ।।४।।

१२३

।। पदराग मस्त ।।

फुटरिया मन रे

तुं तो हर भज पार ऊतर रे ।। थारो अवसर कारज सरे रे ।। फुटरिया मन रे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हंस को कहते है कि,अरे,शाने जीव,तू हर भज और काल से पार हो जा। तेरा समय संसार के ५ आत्मा विषयों में,काम,क्रोध,लोभ,मोह, मत्सर,अहंकार में तथा घर के उद्यम-आपदा में तथा गांगरत में बीत रहा है,इसमें बीतने मत दे। वह समय हर भजन में लगा। इससे तेरा भवसागर से पार उतरने का काज पूरा हो जाएगा। ।।टेर।।

राम सुमर मन ढील न किजे ।। ओ मन झूट बिकार न दिजे ।।
सागट कूं सुण संग न लिजे ।। रे मन साध संगत चित्त धर रे ।। १ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,राम स्मरण में ढिल मत कर। झूठ विकार जो काल के चपेट में डालता है ऐसे विकारो में तेरा मन जाने मत दे। सागट याने जो त्रिगुणी माया में रचा मचा है और साहेब से द्वेष करता है उसका संग मत कर और जो काल से मुक्त करा सकते और घट में ही साहेब प्रगट करा देते है ऐसे साधू के संगत में चित्त धर। ।।१।।

तन मन अरप गुरांजी ने दीजे ।। आठूं पोर अग्या माही रिजे ।।
पतीब्रत खंड कबू नही किजे ।। हाँ रे मन गुरू मुख इम्रत झर रे ।। २ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अरे जीव,शरीर और मन इनको जो परमात्मा प्रगट करा दे सकते है ऐसे सतगुरुजी को साहेब प्रगट कर देने के लिए अर्पण कर और वे जो ज्ञान-आज्ञा करते है उस आज्ञा में आठोप्रहर याने चोबीसो घंटे रह। सतगुरु जो आत्मा का पति परमात्मा की भक्ति बताते है उस भक्ति में कसर मत कर। अरे जीव,परमात्मा प्रगट करा देनेवाले गुरु के मुख से जीव को अमर कर देनेवाली अमृतवाणी झरती है वह अमृतवाणी ग्रहण कर और भवसागर से पार उतर। ।।२।।

अेसो डाव कबू नही पावे ।। मिनषा तन बिन ज्हाँ तंहा जावे ।।
लख चोरासी में गोता खावे ।। हाँ रे मन सबळ स्याम कूं बर रे ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,परमात्मा पति पाने का डाव मनुष्य तन बिना अन्य स्वर्गादिक से नरकादिक तक कही नहीं मिलता। इसकारण हर जीव ८४,००,००० योनि के दु:खों के गोते खाते रहता। इसलिए अरे जीव,जो ८४,००,००० योनि के दु:ख कभी पडने नहीं देता ऐसे सबळ स्याम से विवाह कर मतलब ब्रम्हा,विष्णु, महादेव,शक्ति तथा अवतारों को त्यागकर स्वामी सतस्वरुप का बन जा। ।।३।।

अब के हारो के जीतो रे भाई ।। आ सुण नांव किराडे आइ ।।

खाली करो के भर्दो माही ।। हाँ रे मन रच मच हर सु अड रे ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अरे जीव,यह नैया अनंत जन्मों के बाद राम नाम से भरने के लिए किनारे लगी है याने मनुष्य देह में आयी है। नैया याने मनुष्य देह हर में रचमचकर भजन करने में लगा दे और परमात्मा प्रगट कर महासुखो के सुक्रत से भर दे और काल से जीत जा। सुक्रत से पाया हुआ मनुष्य शरीर माया के विकारी कर्मो में याने व्रत,एकादशी,उपवास,करणी क्रिया,५ विषयों के विकारो में रखेगा तो तेरी किनारे लगी हुई नैया याने मनुष्य तन खाली ही रह जाएगा और तुझे काल जीत जाएगा मतलब तेरी हार होगी। ऐसी हार होने से तेरे पर ८४,००,००० योनि के बार-बार दु:ख पडेंगे। ।।४।।

के सुखराम रिषी जन सोई ।। सिवरण स्याम न भूलो कोइ ।।
इस बिध भक्त करो नर लोई ।। हाँ रे मन जिवत.डोई तू मर रे ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ऋषी,साधु तथा सभी नर-नारियों को कहते है कि,स्वामी का स्मरण करना कोई भी भूलो मत। जैसे मनुष्य का मरने के बाद कुल,परिवार तथा जगत से संबंध खतम् हो जाते वैसे तू होनकाल पारब्रम्ह पिता,इच्छा माता तथा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव व होनकाल जगत इन सभी से संबंध खतम् कर दे ऐसे तू इनके साथ मर जा और श्याम की भक्ति करो। इस विधि से भक्ति करोगे तो भवसागर से पार उतरने का आप सभी का कारज पूरा होगा। ।।५।।

१३५

।। पदराग जोगारंभी ।।

ग्यान ग्रंथ सब सांभळो
ग्यान ग्रंथ सब सांभळो ।। तत्त नाम बिचारो ।।
काम क्रोध अेंकार रे ।। ममता फिर मारो ।। टेर ।।

वेद,शास्त्र,पुराण,कुराण,भागवत आदि सभी ज्ञान ग्रंथ पढो। उसमें तत्तनाम यह सब ज्ञान का सार बताया है ऐसा उसे धारण करो। भवसागर में पटकनेवाले काम क्रोध अहंकार और ममता को मार लो। ।।टेर।।

साच बिना माने नही ।। भव भूख न जावे ।।
कण बिन कूट पराळ कूं ।। कण अेक न पावे ।। १ ।।

जैसे भूख लगने पर बिना अनाज भूख नहीं जाती। अनाज खाने पर तुरन्त भूख जाती। घर में कुटार कितना भी रहा और उसमें अनाज का एक दाना नहीं है तो भुसे को अनाज पाने के लिए कितना भी कुटा तो भी भूख निवारण करनेवाला अनाज उस भुसे से निकलेगा नहीं। ऐसे ही वेद शास्त्र पुराण कुराण में के साररुपी सतनाम धारण किए बिना भवसाग से पार होने का कारज पुर्ण होगा नहीं। ऐसेही साररुपी तत्तनाम सिवा वेद पुराण, कुराण की,माया की,करणियाँ की तो भी मोक्ष मिलेगा नहीं। ।।१।।

तरगस तीर कबाण रे ।। बन्दुक बसावे ।।
बिन खेवट लागे नही ।। गोळी सोर गमावे ।। २ ।।

जैसे किसीके पास बाण,तीर है,कमान है या किसी के पास बंदूक और गोली है परंतु कमान या बंदूक चलाते आते नहीं इसकारण कमान या बंदूक चलाने पर उसकी तीर या गोली व्यर्थ जाती,निशाणे पर लगती नहीं। ऐसेही जगत में रामनाम है जो सतगुरु के विधि से लेगा उसका काम,क्रोध,अहंकार मरेगा और साधू जो सतगुरु के विधि से नहीं करेगा उसका काम,क्रोध,अहंकार नहीं मरेगा। ।।२।।

निर बिना सरीर की ।। भै प्यास न जावे ।।
तेज बिना इण देह मे ।। को गरमी ल्यावे ।। ३ ।।

अनाज,पानी बिना शरीर की भूख प्यास नहीं जाती। सर्दी के दिनों में तेज के बिना शरीर में गर्मी नहीं आती ऐसे ही तत्तनाम बिना शरीर से काम,क्रोध,अहंकार नहीं जाता। ।।३।।

पंथ बिना पग तोड़ीयाँ ।। सो नगर न आवे ।।
गऊं नाळ बोहो माळ कूं ।। केता पंथ जावे ।। ४ ।।

नगर जाने निकला और नगर का रास्ता पकडा नहीं बन का गौ रास्ता याने पैर का रास्ता पकड लिया यह रास्ता नगर जाता नहीं,बन में जाता इस रास्ते से वह कितना भी चला तो भी नगर आएगा नहीं ऐसे ही करणियों के कितने ही पंथ है परंतु उसमें तत्तनाम नहीं है फिर भी करणियों में तत्तनाम ढूँढता तो वह पच पच कर थक जाएगा फिर भी तत्तनाम उसे मिलेगा नहीं। ।।४।।

सो बाता की बात हे ।। कारज कर लीजे ।।
सब तत्तन को तत्त हे ।। तां पर दिल दीजे ।। ५ ।।

जो सब तत्तन का तत्त है उसमें मन लगाओ और घट में तत्तनाम प्राप्त कर अपना काम, क्रोध,अहंकार,ममता मारने का कारज पूर्ण कर लो यही सौ बातो की एक बात है। ।।५।।

साच बिना सीझे नही ।। बिन नेण न सूझे ।।
जन सुखदेव बिन नाँव रे ।। करणी कुण बूझे ।। ६ ।।

जैसे विश्वास के बिना कोई काम पूरा होता नहीं,आँखो के बिना दिखता नहीं इसीप्रकार नाम के बिना काम,क्रोध,अहंकार,ममता मरते नहीं। इसकारण नाम के बिना वेद,पुराण आदि के करणियों को कोई मानता नहीं। ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।६।।

१४७

।। पदराग जोगारंभी ।।

हरसूं हुँ मिलियो चाहिये
हरसूं हुँ मिलियो चाहिये ।। कर इण सूं हुँ प्यार ।।
अगवाणी सूं मिल चलो ।। ज्युँ उतरोला पार ।। टेर ।।

हर(रामजी से)मिलना चाहते हो,तो इनसे बहुत प्यार(प्रिती)करो। अगवाणी(सामने काम करनेवाले),इनसे मिल कर चलो। उनके योग से पार उतरोगे। ।।टेर।।

चोपदार चित्त जाणिये ।। निजमन मंछी होय ।।
कोट वाळ सो साच हे ।। भेळा करसी तोय ।। १ ।।

जैसे राजा के सामने चोपदार रहता है,वैसे यहाँ चोपदार चित्त है और मुन्सी की जगह निजमन है और कोतवाल साँच(विश्वास)यह कोतवाल है। चित्त और निजमन तथा विश्वास(साँच)ये तुझे रामजी से मिला देगें। ।।१।।

ग्यान पोळियो मोख को ।। सोऊँ सेंधा जाण ।।
ओऊँ अरज गुदारणो ।। ररो बोलावाँ बाण ।। २ ।।

यह ज्ञान है,वह मोक्ष के दरवाजे का द्वारपाल है और सोहं(अंदर का साँस)सेंधा(रामजी को जाननेवाला)जान पहचानवाला है और ओअम यह(अर्ज रामजी के सामने रखनेवाला)है और र अक्षर वाणी से बुलवानेवाला,(वहाँ सामने बुलवाता)है। ।।२।।

अे अगवाणी राम का ।। सुणज्यो सब सेंसार ।।
जे चावो हर सूं मिल्याँ ।। चालो इण की लार ।। ३ ।।

ये सभी रामजी के अगवाणी(आगे-आगे करनेवाले)है,वह सभी संसार सुन लो। यदी तुम हर(रामजी से)मिलना चाहते हो,तो इनके(ज्ञान और सोहम्,ओअम् और रकार अक्षर) ,इनके साथ चलो,तो रामजी मिलेगें। ।।३।।

याँ सूं मिलियाँ पाईये ।। सिमरथ सिरजणहार ।।
आन देव सुखराम के ।। पूज्याँ ऊपजे बिकार ।। ४ ।।

इनसे(चित्त और निजमन और साँच,विश्वास)ज्ञान,सोहं(अंदर का साँस ओअम्(बाहर का साँस)और ररंकार इनसे मिलकर चलोगे,तब समर्थ शिरजणहार से मिलोगे। इनके बिना दूसरे,अन्य देवताओं की पूजा करोगे,तो विकार उत्पन्न होगा ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले। ।।४।।

१४८

।। पदराग धनु प्रभाति ।।

हरि को भेद नियारो रे

हरि को भेद नियारो रे ।। लखे कोई संत पियारो रे ।। टेर ।।

रामजी पाने का भेद ब्रम्हा,विष्णु,महेश,शक्ति,अवतार आदि के भेद से न्यारा है। इस भेद को जो जानता वह संत रामजी को प्यारा लगता। रामजी का भेद नहीं जानते ऐसा कोई भी संत कितना भी करामाती,चमत्कारी रहा तो भी रामजी को प्यारा नहीं लगता। ।।टेर।।

मुगत को भेद नियारो रे ।। जाणे कोई जाण न हारो रे ।। १ ।।

काल से मुक्ति पाने का भेद न्यारा है। उसके भेद को रामजी के समझवालाही संत जानेगा दूजे संत नहीं जानेंगे। ।।१।।

गोविन्दो हे ज्युँ गावे रे ।। जके मोने संत मिलावे रे ।। २ ।।

गोविंद याने रामजी जैसा है,वैसे का वैसा जो गाता,बताता और घट में प्राप्त कराता वैसे संत को मुझे मिला दो। ।।२।।

हरि ब्रम्ह हे ज्युँ बतावे रे ।। इस्यो कोई मोय जतावे रे ।। ३ ।।

हर ब्रम्ह जिसके घट में प्रगट है वैसेकी वैसी विधि कोई मुझे समझा देगा वह संत मुझे मिला दो। ।।३।।

गुरा बिन भेद न पावे रे ।। जके सुण दोय बतावे रे ।। ४ ।।

सतगुरु ब्रम्ह को जैसे के वैसा घट में जानते। सतगुरु के सिवा ब्रम्ह किसी ज्ञानी को मिलता नहीं इसलिए ये ज्ञानी ब्रम्ह को जैसे के वैसे नहीं जानते इसकारण माया को ही ब्रम्ह समझकर गाते और साथ में ब्रम्ह यह माया से निराला है ऐसा भी कहते ऐसी दो बातें बताते। ।।४।।

मुगत कूं नाव बणायो रे ।। करमा कूं नरक ठेराया रे ।। ५ ।।

निजनाम यह काल से मुक्ति की रीत बताई,तो विषय विकारों के कर्म काल के नरक में पड्ने की रीत बताई। ।।५।।

सुखदेव सत्तगुर पाया रे ।। घट घट में ब्रम्ह बताया रे ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जब प्राणियों को सतगुरु मिलते तब शरण में आनेवाले सभी प्राणियों को अपने अपने घट में सतस्वरुप ब्रम्ह मिला देते। ।।६।।

१४९

।। पदराग धनाश्री ।।

हरि को भेद न्यारो रे

हरि को भेद न्यारो रे ।। लखसी बिर्ळा कोय ।।

ओर न दूजो जाणसी रे ।। कोई जाणे हरिजन होय ।। टेर ।।

हरि पाने का भेद ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के भक्तियों से निराला है। यह भेद कोई बिरला संत ही जानता। ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति और अवतारों के भक्त यह भेद नहीं जानते। जो हरी के भेद को जानता वह हरिजन होता। ।।टेर।।

ग्यान कथे बाणी पढे रे ।। बाचे बेद कुराण ।।

वा सुण सोभा जक्त की रे ।। पेट भरण गत जाण ।। १ ।।

जो वेद पढ्ते,कुराण पढ्ते,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति का ज्ञान कथते और उनके साधुओं की वाणी पढते वे हरी का भेद नहीं जानते। इन ज्ञान कथने, पढने से जगत में उस ज्ञानी की शोभा होती और संसार के लोग इनका पेट भरे इसलिए भेट पूजा चढाते। इसप्रकार ये पेट भरनेपुरता सुख देता परंतु इन्हें हरी का घर नहीं मिलता। ।।१।।

भेष बणावे फूटरा रे ।। नाना बिध का कोय ।।

घर तज हींडे जूग मे रे ।। अेभी साध न होय ।। २ ।।

नाना प्रकार के भेष धारण करते जैसे जटा बढाते,सिर मुंडते,शरीर के उपर राख लगाते, मस्तक पर टिके लगाते और घर त्यागकर जगत में घर-घर में हिंडते परंतु ये भी भेषधारी साधू हरी का भेद जाननेवाले साधू नहीं है। ।।२।।

सुरगुण सेवा बंदगी रे ।। रहयो ओऊँ सूं लाग ।।
जब लग माया मांय हे रे ।। गया भ्रम नही भाग ।। ३ ।।

ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,इन त्रिगुणों की भक्ति करते,ओअम को भृगुटी में चढाते परंतु ये सभी साधू हरी का भेद जाननेवाले साधू नहीं है,ये माया में ओतप्रोत है,ये भ्रम में है इनके भ्रम नहीं गए। ।।३।।

के सुखदेवजी सांभळो रे ।। उलट चडो आकास ।।
ता दिन वो घर पायबो रे ।। राम मिलण की आस ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सभी सुनो,जिस दिन उलटकर आकाश चढोगे उस दिन हर का घर मिलेगा। उस दिन राम मिलने की आशा पूर्ण होगी। ।।४।।

१५७

।। पदराग धमाल ।।

इण मन सूं कहो काहा कीजे हो
इण मन सूं कहो काहा कीजे हो ।। ओ जाण बूझ छिप जावे ।। टेर ।।

अब,इस मन का,मैं क्या करु,वह बताओ?यह मन,जान बूझकर छुप जाता है। ।। टेर ।।

जे सुण मड़ो दूबळो होवे ।। ग्यान नाज ले खुवाऊँ ।।
कर हट पिंड हाड बे तूटो ।। तो भेद घ्रित ले पाऊँ ।। १ ।।

यदी यह मन दुबला(कमजोर)हुआ है,तो इसे ज्ञान रुपी अन्न खाने को दूँगा,(जिससे ज्ञान रुपी अन्न खाकर,धष्ट-पुष्ट हो जायेगा।)इसकी हड्डी में कोई कसर रही तो या उसकी हड्डी टुट गयी है,तो इस मन को,मैं भेद रुपी घी पिलाऊँगा जिससे भेद रुपी घी पीकर, इसकी टूटी हड्डी जुड जायेगी। ।। १ ।।

भोळप व्हे तो बुध्द सुध्द देऊँ ।। बाळक लूं पोटाय ।।
मोटो व्हे तो शब्दां मारूं ।। जख बिड़दाऊँ जाय ।। २ ।।

यदी यह मन भोला है,तो इसे बुध्दि और सुध्दि(समझ)दूँगा और छोटा बच्चा होगा,तो इसे लालच देकर समझाऊँगा और मन बडा होगा,तो उसे शब्दों से मारुँगा,(गुरु के ज्ञान के शब्द से मारुँगा)और यह मन यक्ष होगा,तो इसे बडप्पन देकर चढाकर खुश करुँगा। ।।२।।

मानत नही चबे सो सांमो ।। अर्थ धन दूँ आय ।।
जे ओ जजक भिड़क जे जावे ।। तो गहुँ हूँ प्रसंगा मांय ।। ३ ।।

यह मेरा सुनता नहीं है और सामने जवाब देता है तो इस मन को अर्थधन देता हूँ। यदी यह मन किसी प्रसंग के कारण चमक के डर जाता है,तो इसे डर भाग जाने के अनेक प्रसंग बताकर प्रसंगो में पकड लूँगा। ।। ३ ।।

मांदो व्हे तो ओषद पाऊँ ।। नाँव जड़ी घस लाय ।।
केहे सुखराम लालची व्हे तो ।। मोख पद दूं जाय ।। ४ ।।

यदी यह मन बीमार हो गया होगा,तो इसे दवा पिलाऊँगा। दवा कौनसी कहोगे,तो राम नाम रुपी जडी लाकर,घीसकर,इसको पिला दूँगा। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,यह मन लालची रहा,तो इस मन को,मोक्ष पद का लालच दुँगा,परन्तु इस मन को क्या करे,कैसे समझाये यह बोलो। ।। ४ ।।

१७१

।। पदराग मंगल ।।

जे तलफो कोई जीव

जे तलफो कोई जीव ।। मुक्त कूं तलफीयो ।।
झूटी माया काज ।। मति कोई कलपीयो ।। १ ।।

अरे जीव,तड़पते हो तो परममुक्ति के लिए तड़पो,संसार के झूठी माया के लिए कोई भी मत तड़पो। ।।१।।

जे ब्रहे कीजे जोय ।। सांई कूं मोहीयो ।।
झूटा कुटम कुळ काज ।। मती कोई रोईयो ।। २ ।।

तुम्हें विरह आती है तो साँई से विरह करके साँई को मोहित करो याने साँई पाने के लिए रोओ,झूठे कुल,कुटुम्ब के माया के कसर के लिए कोई मत रोओ। ।।२।।

दाव गांव सुण सोच ।। चिंता जो कीजियो ।।
कर साहेब के लेण ।। मुक्त गम लीजीयो ।। ३ ।।

दाव,घाव,चिंता,फिकिर करनी है तो साहेब प्राप्त करने के लिए करो,परममुक्ति समझने के लिए करो,झूठी माया के लिए मत करो। ।।३।।

जे कमतर की चाय ।। भजन सो कीजीयो ।।
क्है सुखदेव जुग काम ।। सेल मे लीजीयो ।। ४ ।।

परममुक्ति पाने की कमतरता है क्या यह जानो और वह कमतरता है तो वह कमतरता पुर्ण करने के लिए भजन करो। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अन्य सभी जगत के माया के काम कम–जादा होना इसे सहज भाव से देखो उसके लिए तड़पो मत। ।।४।।

१८३

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

जुग कछु लेत देत कछु नाही

जुग कछु लेत देत कछु नाही ।। अेक केबत के काजा बे ।।
सतगुरू बचन ऊथापे मूरख ।। जुग कुळ की गहे लाजा बे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ये संसार के लोगों को जिस पर काल के दु:ख पड़ते उससे कोई लेना देना नहीं रहता। जीवो को होनेवाली काल की पीडा सिर्फ

सतगुरु से देखे नहीं जाती परंतु ऐसे सतगुरु के बचन मूर्ख जीव उथापता और भक्ति त्यागकर सतगुरु धारण करने पर कुल क्या सोचेगा?समाज क्या सोचेगा?जगत के अन्य लोग क्या सोचेंगे?इन विचारों की लाज पकड्कर सतगुरु ज्ञान नहीं सुनता। ।।टेर।।

कुळ मर्जाद लाज ईण हंस कूं ।। जुग जुग नर्क पठावे बे ।।
सो मर्जाद नेक नही लोपे ।। गुरू धरम बणे तो ऊठावे बे ।। १ ।।

कुल मर्यादा की लाज रखने से यम जीव को जुगान जुग नरक में डालता है। ऐसे नरक में डालनेवाले कुल के मर्यादा को जरासा भी नहीं लोपता परंतु गुरु धर्म मात्र त्याग देता है। ।।१।।

तज सब ज्हान भजन कर सूरा ।। सत्त साहेब रिजावो बे ।।
जुग जुग जगत करे संत सोभा ।। आणंद पद तब पावो बे ।। २ ।।

अरे शुरवीर,कुल,समाज,जगत इन सभी को त्यागकर सतसाहेब को खुश कर। सतसाहेब रिझने से तेरी जुगान जुग तक संत करके शोभा होगी और तू होनकाल से छुटकर महासुख के आनंदपद में पहुँचेगा। ।।२।।

ध्रग ध्रग रे तां कूं कहे सुखदेवजी ।। कुळ सूं डरे नर नारी बे ।।
भगत पदारथ गुरू ध्रम लोपे ।। सो दोजख ईधकारी बे ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ,जो नर–नारी कुल,समाज,जगत से डरकर सतगुरु वचन त्यागते उनको धिक्कार है,धिक्कार है। ये नर–नारी भक्ति पदार्थ याने गुरु धर्म त्याग देते और नरक में डालनेवाले काल पदार्थ ग्रहण करते है। ।।३।।

१९६

।। पदराग बिलावल ।।

करणी करे रेणी रहे

करणी करे रेणी रहे ।। सोही जन साँचा ।।
वे ने: चे फल पावसी ।। मनसा सुण बाचा ।। टेर ।।

जो जैसा बोलता है,वैसा ही सतस्वरुप की करणी करता है और जो जैसा बोलता है,वैसा ही सतस्वरुप की रहणी रहता है,वही सतस्वरुपी संत है। वह निश्चित ही अपने मन के जैसा और वचनोंके प्रमाण से फल पायेगा।(जैसे वचन बोलता है,वैसा रहता है और चलता है,उसके बोले गये वचन,झूठे नहीं होते है,जो अपने बोले गये वचनों के अनुसार करता और चलता है,वह दूसरा और भी कुछ कहेगा,तो वह भी उसके कहे नुसार,सत्य हो जाता है।)।।टेर।।

केता ज्युं चलता नही ।। सो पाखंड ले धारा ।।
ज्याँ सु साहिब दूर हे ।। लख क्रोड़ हजारा ।। १ ।।

और सतस्वरुप के जैसा बोलता है,उसी तरह से जो चलता नहीं है,तो उसने सतस्वरुपी भक्ति के नाम पर पाखंड लेकर,धारण किया हुआ है।(जैसा बोलता,वैसा चलता नहीं),

उससे साहेब(मालिक)हजारों लाख कोस दूर है।(जो बोलता जैसा चलता नहीं,तो उससे मालिक बहुत दूर रहते है।)।।१।।

ज्युं केता त्युं ही चले ।। जाकां काहां कहिये ।।
वे जन साहेब अेक हे ।। सरणो गहे रहिये ।। २ ।।

और जो सतस्वरुप के जैसा बोलता है,वैसे ही चलता है,तो उसकी(महिमा),मैं क्या कहूँ?वह(जैसा बोलते,वैसा चलनेवाले)जन(संत)और साहेब,ये एक ही है। ऐसे संतो की शरण लेकर रहिये।(जैसा बोलते है,वैसा चलते है,ऐसे संत और साहेब एक ही है। उस संत की शरण लेने से,साहेब की शरण लेना हो जाता है,क्योंकि साहेब और संत एक है।) ।।२।।

रच मच लागा नांव सुं ।। भुला जुग माया ।।
सो जन साचा संत हे ।। ऊलटर गिगन सिधाया ।। ३ ।।

और जो राम भजन करने में,रच-मच कर लगे हुअे है और जो संसार की माया है,उसे भूल गये है,जो गगन में(ब्रम्हाण्ड में)उलटकर,(बंकनाल के रास्ते से)चढ़ गये है,वे जन सच्चे संत है। ।।३।।

लाख बात की अेक हे ।। जे कारज चहिये ।।
के सुखदेव तज झूठ रे ।। सिंवरण सच गहिये ।। ४ ।।

लाखों बात की,एक बात मैं तुम्हें बताता हूँ कि,यदी तुम्हारे जीव का कार्य,तुम्हें करना हो तो,तुम इस झूठी माया को छोड़कर,जो सत्त है,उसका सुमिरन करना,धारण करो। ।।४।।

२२७

।। पदराग धनाश्री ।।

मनवाँ लाणत तोय रे
मनवाँ लाणत तोय रे ।। कहाँ लग कहुँ समझाय ।।
बिन समझ्या नही दोस रे ।। तूं समझर भूलो जाय ।। टेर ।।

अरे मन,अरे जीव,तुझे लाणत है,धिक्कार है। मैं तुझे,कहाँ तक समझाकर कहूँ,जिसे समझ नहीं है,उसका तो दोष नहीं,परन्तु तु समझकर के,भूल करता है इसलिए तुझ में दोष अधिक है। जो समझता ही नहीं है,उसमें दोष कम है। ।।टेर।।

आठ पोहोर चरचा सुणे रे ।। तूं भजन करेनी आय ।।
ओर सकळ बिध परहरी रे ।। आ मे ते रीस न जाय ।। १ ।।

तू आठो प्रहर,रात-दिन सतस्वरुप ज्ञान की चर्चा सुनता है परंतु तु सतस्वरुप का भजन करता नहीं है तथा तु ज्ञान सुन-सुन कर माया की सब विधि भी छोड दी है परन्तु तेरे अन्दर तो,मैं और तु(मेरा और तेरा)और क्रोध है,वह जाता नहीं है। ।।१।।

ओरां कूं परमोद दे रे ।। सब झूठो सेंसार ।।
ते साचो कर मानियो रे ।। पखा पखी शिर धार ।। २ ।।

तू दूसरे को तो(प्रमोद) उपदेश देता है कि,यह सारा संसार झूठा है। दूसरो को,संसार झूठा है,ऐसा कहता और तु संसार को झूठा न मानकर,संसार को सत्य मानकर,संसार को पकडकर बैठा है और पखा-पखी शिरपर धारण करता,(कभी किसी का भी पक्ष पकडता,तो कभी किसी के विरुध्द बोलता है जैसे पत्नी का पक्ष लेता,तो बहन के विरोध में बोलता है।)। ।।२।।

ब्रम्ह भ्यास्यो जन ओळख्या रे ।। आतम लीनो चीन ।।
जाणन में कम कुछ नही रे ।। ओ चित नहीं वो लवलीन ।। ३ ।।

यदी कोई कहता है कि,मुझे ब्रम्ह का आभास हुआ है तथा कोई कहता है कि,मैंने संतो को पहचान लिया है और कोई कहता है कि,मैंने आत्मा को जान कर,पहचान किया है,तो ब्रम्ह,संत और आत्मा इन्हें जान लेने से,कुछ काम होता नहीं है। इन्हें जान तो लिया, परन्तु ब्रम्ह,संत और आत्मा में तुम्हारा चित्त लवलीन हुआ नहीं है(सिर्फ जान लेने से कोई काम कुछ होता नहीं।)। ।।३।।

ग्यान ध्यान जाणे सबेरे ।। तू समझे सार असार ।।
सुखदेव तोई ने तजे रे ।। ओ मन बिषे विकार ।। ४ ।।

तु तो सभी ज्ञान जानता है और ध्यान करना भी जानता है,सार क्या है असार क्या है इसे भी समझता है तो भी तु विषय विकार को छोडता नहीं है। अब तुझे कहाँ तक समझाकर बताऊ ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।४।।

२२९

।। पदराग बसन्त ।।

मत भूलो हो मन माया संग

मत भूलो हो मन माया संग ।। समझ सोच कर रहो अभंग ।। टेर ।।

अरे जीव,मन के वश होकर विषयों के रस पुरानेवाले ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति आदि माया के भक्तियों में भूलो मत। इस त्रिगुणी माया के विषय रसों को काल समझ रामनाम में सोच समझ के पक्के रहो। इन विषय रसों के सुखो के लिए कच्चे मत पड । ।।टेर।।

भगत बिना नर ध्रक कहाय ।। कोट अकल बुध्द अेळी जाय ।।
नाँव बिनाँ सब आळ जंजाळ ।। सुणज्यो शिष्ट संत सरब गवाळ ।। १ ।।

सतस्वरुप के भक्ति बिना तेरे मनुष्य जन्म को धिक्कार है,धिक्कार है। तुझे करोडो प्रकार की अकल और बुध्दि है फिर भी ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति के भक्तियों का परिणाम मोक्ष नहीं है,विषय रस है और इन विषय रसों में काल है यह तुझे नहीं समझ रहा इसलिए तेरे बुध्दि और अकल को धिक्कार है,धिक्कार है। रामनाम बिना सभी भ्रम का जंजाल है, काल के दु:खों का जंजाल है,सभी सृष्टि के संतो समझो। रामनाम बिना सभी भक्तियाँ भ्रम का जंजाल है यह जो नहीं समझता वह बिना अकल का है,मूर्ख है। ।।१।।

आन धरम सब माया होय ।। याँकूं पूज तिऱ्यों, नहिं सुण्यो कोय ।।

तारण हार ब्रम्ह राम राय ।। गुरू गम भेदज लहिये जाय ।। २ ।।

रामजी छोड्कर अन्य सभी धर्म यह माया है। पाँचो विषयों के भोग प्राप्ती की विधियाँ है। इन धर्मो को पूजने से आजदिन तक कोई भी भवसागर तिरा यह सुना नहीं। भवसागर से तिरानेवाला सिर्फ ब्रम्हराम राय है। यह ब्रम्हराम राय सतगुरु के भेद से घट में प्राप्त होता अन्य किसी भी माया के विधियों से प्राप्त होता नहीं। ।।२।

जिण जिण प्रीत लगाई आय ।। तिरता बार न लागी काय ।।
ऐसो नाँव न: केवळ होय ।। तिरिया संत अनेकुं लोय ।। ३ ।।

जिसने-जिसने सतगुरु को निकेवल करके प्रीति की वे सभी बिना विलंब सहज तिर गए। ऐसे इस निकेवल नाम से अनंत संत भवसागर से तिर गए। मोक्ष न देनेवाले संत दिखने में,बोलने में बैरागी विज्ञानी संत के सरीखे दिखते परंतु मोक्ष देने के लिए झुठ ठहरते ऐसे माया के संतो का त्याग करो और निकेवल संत का संग करो। ।।३।।

छोड़ो झूठ कर साच संग ।। पाको रंग चढावो अंग ।।
के सुखदेव बजाय बजाय ।। इम्रत छाड बिषे मत खाय ।। ४ ।।

विषय रसो का झूठा रंग त्याग दो और वैराग्य विज्ञान का सच्चा रंग चढा दो। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बजा-बजा कर कहते है कि,वैराग्य विज्ञान अमृत त्यागकर विषय रस मत खाओ इसलिए विषय रस उपजानेवाले धर्म त्यागो और वैराग्य रस उपजानेवाला धर्म धारण करो। ।।४।।

२३७

।। पदराग मस्त ।।

म्हाने अबचळ बर प्रणावो ओ
म्हाने अबचळ बर प्रणावो ओ ।। आतम का वो बापजी ।।
वांहाँ अमर सुहागण कुवां वा ।। आत्म का बापजी ।। टेर ।।

आत्मा अपने सतगुरु पिता से कहती है कि,आप मेरा अविचल याने जिसे काल खायेगा नहीं ऐसे वर के साथ मेरा विवाह कर दो। वहाँ मैं अमर याने सदा सुहागण कहलाऊँगी ।।टेर।।

जे मर जाय तिके नहि ब्याऊँ ।। च्यार दिना फीर रांड कुवांऊं ।।
पीछे संकट बोहोत दुख पाऊँ ।। हो जां के काळ धरे नही जाय हो ।। १ ।।

जो मर मर जाते उनके साथ मैं विवाह नहीं करुँगी। चार दिन में वे मर जाएँगे,उनके मरने पश्चात मुझे विधवा कहेंगे। उनके मरने पश्चात मुझपर बहुत संकट एवमं दु:ख पडेंगे। ऐसा वर जिसे काल धरेगा उसके साथ मैं विवाह नहीं कराऊँगी। ।।१।।

जे आधिन ओर बस होई ।। जाचक देव न मानू कोई ।।
जे दुख आप काहा सुख लोई ।। हो अे तो सब जंवरो चुण खाय हो ।। २ ।।

जो काल के अधीन है,काल के बस में है ऐसे काल के जुलूम भोगनेवाले देव को मैं पति

नहीं मानूँगी। जो स्वयम दु:ख में है वह मुझे क्या सुख देगा,जिसको ढूँढकर यम खाएगा वह मुझे यम से कैसे बचाएगा?।।२।।

ज्यांरी बात मांड लग होई ।। तीन लोक आगे नई कोई ।।
वे बर परथ न मानू सोई ।। हो म्हाने अवगत हर सूं ब्यावो हो ।। ३ ।।

जिसकी बात काल के तीन लोक के सृष्टि तक ही है,तीन लोक के परे नहीं है उसको वर करके मैं नहीं मानूँगी। इसलिए आप मेरे पिता सतगुरु,मेरा विवाह अविगत हर से कर दो। ।।३।।

के सुखराम बजाई बजाई ।। जे कोई बींद नही जग माई ।।
तो तूं बाप परण हर आई ।। हो में तो साच कहयो तहूं सुण हो ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बजा-बजाकर कहते है कि,अगर मेरे लिए जगत में अविगत पति नहीं है तो आप मेरे साथ विवाह करो। यह मैं सत्तज्ञान से सोच कर कह रही हूँ यह आप सुनो। ।।४।।

२४४

।। पदराग हिन्डोल ।।

मोख भजन बिन नाही रे
मोख भजन बिन नाही रे ।। सब बिध हदके माही रे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जीव का होनकाल के चक्कर से मोक्ष होना याने मुक्त होना यह सतस्वरुप साँई का भजन किए बिना नहीं होगा। साँई का भजन छोड्कर सभी माया की विधियाँ हद के अंदर याने होनकाल में ही रखनेवाली है। ।।टेर।।

न्हाया धोया मोख मीलीजे ।। तो मीन्डक मींछया जाई रे ।। १ ।।

सभी तीर्थो में शरीर को नहलाने,धुलाने से जीव का मोक्ष होता तो उस नदियों में रहनेवाले सभी मेंढक और मछलियाँ के जीव अभीतक मोक्ष में चले गए होते। उनमें से आजदिन तक कोई भी मोक्ष नहीं गया। इसका अर्थ शरीर को नहलाने,धुलाने से जीव का मोक्ष नहीं होता उलटा कर्म बनते। ।।१।।

सरबंग होया प्रमपद पावे ।। तो सांसी सब संग खाई रे ।। २ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सरबंग याने कुंडापंथी होने से याने ऊँचे कर्मी जीव नीचकर्मी के साथ कोई भेदभाव न रखते हुए खाते पीते इस विधि से अगर जीव का मोक्ष होता तो सांसी जात के सभी लोग आजदिन तक काल से छुटकर मोक्ष में गए होते। यह जात कोई भी ऊँच-नीच का भेद न रखते हुए खाते पीते है। ।।२।।

सब संग भोग किया घर पावे ।। तो पसू पंखी सब जाही रे ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,कुंडापंथीवाले पक्के ,कच्चे,स्त्री की मर्यादा नहीं रखते और सभी स्त्रियों के साथ भोग लेते और समझते की सभी स्त्रियों के साथ भोग लेने से जीव काल के मुख से छुटता। अगर सभी स्त्रियोंके साथ भोग लेने से मोक्ष होता तो

कुंडपंथियों के पहले सभी पशु पक्षी मोक्ष गए होते। ।।३।।

लछण मत सूं मोख पहूंते ।। तो मानव बिन सब जाहीं रे ।। ४ ।।

इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जीवो को कहते है कि,शरीर( )के कोई भी लक्षण तथा मत धारकर कोई भी मोक्ष नहीं जाता। अगर शरीर लक्षण धारकर कोई भी मोक्ष में जाता था तो मानव देह छोड्के सभी ८३,९९,९९९ प्रकार के जीव मोक्ष में गए होते। ।।४।।

राम रटन लिव कांई निंन्दे ।। सुर नर पसवा माही रे ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के क्रिया कर्म करनेवालो को समझा रहे है की, जिसने राम रट्ने की लिव लगाई है ऐसे जन की निंदा मत करो। काल के मुख से मुक्ति पाने के लिए देव ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,नर याने संतजन और पशु याने हनुमान आदि ने राम रट्ने की ही लिव लगाई है। ।।६।।

राम नाम सूं गिनका तिरगी ।। बिषे बास तन माही रे ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,इस रामनाम के भजन से विषयो से भरी हुई गिनका तीर गई ऐसा यह पराक्रमी रामनाम है। ।।६।।

राम बिना कोई मोख न जावे ।। तो लछ क्हा धराई रे ।। ७ ।।

यह रामजी के रटन बिना कोई भी अच्छे लक्षण धारण करने से आजदिन तक मोक्ष में नहीं पहुँचा। इसलिए ऊँचे या नीचे लक्षण मोक्ष पाने के काम के लिए पकड के रखना किसी उपयोग के नहीं। ।।७।।

के सुखराम सुणो सब जीवां ।। राम नाम सत्त वांही रे ।। ८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जीवों को चेता रहे है कि,जिस जिस हंस ने होनकाल की सभी विधियाँ की और उन किसी भी विधि से मोक्ष नहीं मिला। इसकारण वे सभी विधियाँ त्याग दी और रामभजन रट्ने की लिव लगाई और काल के मुख से छुट्कर महासुख के मोक्षपद में पहुँच गए। ऐसे सभी मोक्ष पहुँचे हुए सभी अनुभवी संतों ने कहा की मोक्ष पाने के लिए रामनाम ही सत है बाकी सभी होनकाल की विधियाँ असत है। ।।८।।

२४८

।। पदराग हिन्डोल ।।

नर तांका कोण हवाला हे

नर तांका कोण हवाला हे ।।

आठ पोहोर निंदा की लारा ।। नर तांका कोण हवाला हे ।। टेर ।।

जो आठोप्रहर,निन्दा करनें के पीछे लगे रहते है।(रात-दिन सतस्वरुपी संतों की और जगत के लोगों की निन्दा करते है। उनकी क्या हालत होती है?)।।टेर ।।

क्षणभर निंदा नारद कीनी ।। संकट जूण मे डारा हे ।। १ ।।

नारद ने(एक किरनी की)क्षणभर निन्दा की थी।(उस किरनी को आठ पुत्र थे। उसमें से

एक मर गया,तब वो(विलाप)आक्रांत करके,रो रही थी। वहाँ अचानक नारद आया और किरनी से पूछने लगा,किसलिए रो रही हो?किरनी बोली,मेरा बेटा मर गया है,नारद बोला ,अब तुझे और दूसरा पुत्र नहीं क्या?किरनी बोली और दूसरे सात बेटे है। आठ बेटे थे, उसमें से एक मर गया। नारद बोला,फिर एक बेटे के लिए,क्यों रो रही है?और भी पीछे सात है। एक मर गया तो मर गया और भी अधिक इस किरनी की,नारद नें निन्दा की। किरनी बोली,नारद तुझे पेट की आग मालूम नहीं है और भी सात पुत्र है,परंतु उनकी बराबरी तो,वही कर रहा था। नारद उसकी निंदा करते हुए,आगे बोला,तब आगे एक तालाब आया। नारद ने उसमें स्नान करने का विचार करके,तालाब में गया और डुबकी मारकर उपर आते ही,मुँह पर हाथ फेरा,तो नाक को खेकड़ा पकड़ा है,ऐसा दिखा। खेकड़े को तोड़कर दूर फेकने के लिए देखता है,तो खेकड़ा नहीं,नाक में नथ है। नारद अचंबे में पड़कर,सिरपर हाथ फेरता है,तो सिर के उपर बाल,अच्छे धोये हुए,नरम केस हाथों में आया और शरीर पर हाथ फेरता है,तो स्तन भी स्त्री के जैसा लगने लगा,फिर नीचे देखता है,तो पुरूष का आकार न होकर,स्त्री का आकार मिला और फिर चिन्ता करते हुए,बाहर आकर बैठा। इतने में एक किर आकर बोलने लगा,तीन दिन हो गये,तूं घर के बाहर कहाँ चली गयी थी?ऐसा बोलते हुए और नारद को धक्के मारते हुए,अपने घर लाया और नारद ने भी सोचा,की,अब मैं स्त्री हो गयी हूँ,अब कहाँ जाऊँ?ऐसा विचार कर,अब उसके घर रह गयी। उस नारदी को,वहाँ साठ लड़के हुए। उसमें से एक बच्चा मर गया,तब नारद आक्रांत करके रोने लगा तब वहाँ विष्णु,दूसरे रूप में आकर बोलने लगा। तूं क्यों रोती है,तब नारदी बोली,की,मेरा एक बच्चा मर गया है तब विष्णु बोला, तुझे अब और बच्चे नहीं क्या?तब नारदी बोली,की और उनसठ है,साठ थे। उसमें से एक मर गया तब विष्णु बोला,फिर एक बेटे के लिए क्यों रोती है। इतना सुनते ही,उस नारदी को,उस पहले की किरणी की याद आयी और नारदी बोली कि,इन बच्चों की बराबरी यही कर रहा था तब विष्णु हँसा और नारद भी समझ गया कि,यह और कोई नहीं,विष्णु है। इतने मे विष्णु के पैर पड़ते ही,मरा हुआ बच्चा जिवीत हो गया। वहाँ किर की झोपड़ी भी नहीं और किर भी नही तथा नारद भी मनुष्य बन गया। वे साठ बच्चे,नारद के पीछे लग कर,हमे खाने को दो,हमे खाने को दो ऐसा बोलते हुए,खाने को माँगने लगे, नारद बोले,इतने साठ चिल्ले-पिल्ले लेकर,मैं कहाँ जाऊँ और उनको क्या खाने को दूँ, इनका पोषण कैसे करूँ?इसकी अपेक्षा तो,मैं स्त्री ही रह गया रहता,तो बहुत ही अच्छा रहता ऐसी चिंता करने लगा। इतने मे ब्रम्हा और महादेव भी आये। उन साठ बच्चों में से,बीस विष्णुने लिए और बीस ब्रम्हा को दिए और बीस महादेव को दिए। उन साठ संवत्सरोंके नाम इस नारद के साठ बच्चों में से,विष्णु ने थावा,युवा,धाता,ईश्वर,बहुधा, प्रमाथी,विक्रम,व्रष,चित्रभानू,सभानु,तारण,पार्थीव,व्यय,सर्वजीत,सर्वधारी,विरोध,विक्रती,खु

रनंदन,विजय इस तरह से बीस संवत्सर,विष्णुने लिए और आगे के बीस महादेव ने लिए। उनके नाम वाजय,मन्मथ,दुर्मुख,हमलंबी,विलंबी,विकारी,शार्वरी,पल्ब,शुभकृत,शोभन,क्रोधी ,विश्वासू पराभव,पल्बंग,किलक,सौम्य,साधारण,विरोधकृत,परिधावी,प्रमाधी ये महादेव के, बीस संवत्सर हुए। अब ब्रम्हा के बीस संवत्सरों के नाम आनंद,राक्षक,अनल,पींगल, कालयुक्त,सिद्धार्थी,रौद्र,दुर्मती,दुदुंभी,रूधीरोद्वारी,रक्ताक्षी,क्रोध,क्षय,प्रभव,विभव,शुक्ल प्रमोद,प्रजाप,अंगीरा,श्रीमुख ये ब्रम्हा ने,नारद के बीस पुत्र लिए ये उनके नाम है।)तो इस प्रकार से एक क्षण नारद ने निंदा की थी,तो उसे संकट योनि में डाल दिया। ।। १ ।।

अेक घड़ी माई की नींदा ।। ऊभे काठ मे बाळा हो ।। २ ।।

चित्र और विचित्र नें अपनी माँ(सत्यवती,मत्सगंधा)और अपने भाई भिष्म की,निन्दा की। कि,ये रात में एक जगह बैठकर,कुकर्म करते रहते,इसलिए चित्र और विचित्र ने,रात मे एकांत मे बैठकर देखने लगे तो भिष्म पोथी लेकर,सत्यवती को ज्ञान बता रहा था। सत्यवती को नींद आने से,सत्यवती का पैर(बाजे)नीचे लटक गया। ऐसा देखकर, सत्यवती को तकलीफ हो रही है इसलिए पैर बाजेपर कर दिया जाय,परन्तु हाथ कैसे लगायें,इसलिए पैर को हाथ न लगाकर,भिष्म ने सत्यवती का पैर,अपने मस्तक पर लेकर,उठाकर(बाजेपर)रख दिया,यह बात चित्र-विचित्र ने देखी। चित्र और विचित्र ने यह बात,दूसरे दिन भिष्म से पूछी,कि,कोई अपने माँ का और बडे भाई का संशय लाकर, निन्दा करेगा,तो उसका प्रायश्चित क्या होगा?इन्होंने ही निन्दा की है,ये भिष्म को मालूम नहीं था। भिष्म बोला,इस का प्रायश्चित बहुत ही कठिण है। कही भी सुखा खोखला पीपल का पेड़ देखकर,उसे उसमें बैठाकर,चारो तरफ से उसे रूई बांधकर,उसके उपर तेल और घी डालकर,आग लगा देनी चाहिए,इसका यह प्रायश्चित है। यह सुनकर चित्र और विचित्र,जंगल में जाकर,सुखा खोखला पीपल देखा और उसमें बैठकर जल गये। निन्दा का इतना प्रायश्चित है। ।।२।।

गण गंध्रप सो निंदा कीनी ।। बिवाँण उथल भू डाला हो ।। ३ ।।

गंधर्व गण ने,निंदा की थी,उसका विमान उलटकर,उसे जमीन पर गिरा दिया,(वह सर्प हो गया।)।।३।।

निंदा सूं नर नरक पड़त हे ।। साख भरत किसन गुवाला हो ।। ४ ।।

निन्दा करने से,मनुष्य नरक में पड़ता है इसका कृष्ण ग्वाला(गाय चरानेवाला)साक्ष देता है। ।।४।।

कहे सुखराम भागवत गावे ।। निंदक का मुख काला हो ।। ५ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि,निंदक का मुँह,जहाँ-तहाँ काला होगा ऐसा भागवत में गाते है। ।। ५ ।।

ओ तज दूजा जे भजे

ओ तज दूजा जे भजे ।। से भूले संसार ।।

अनंत जनम लगे पच मरे ।। तोई न उतरे हे पार ।। टेर ।।

यह राम नाम छोड़कर,जो दूसरों को भजते है वे संसार में भुले हुए(बहके हुए)है। दूसरो को भजनेवाले,अनंत जन्मो तक,थक–थक कर मर जाएँगें तो भी,रामनाम का भजन किए बिना,पार उतरेंगे नहीं। ।। टेर ।।

हिंदु मुसलमान कूं ।। सुणज्यो सब तम भेव ।।

रमता साहिब रामजी ।। ओ हे सब को देव ।। १ ।।

हिन्दू और मुसलमान,सभी तुम भेद सुनो। रमता साहेब(जो सभी में रम रहा है)वह रामजी ही सभी के देव हैं । ।। १ ।।

पीर तिथंगर अवलिया ।। ओरूं सब अवतार ।।

सब मांही ओ देव हे ।। सुणज्यो सुरता बिचार ।। २ ।।

पीर,तीर्थकर,अवलीया और भी सभी अवतार,इन सभी में यह देव है।(रामजी सर्वव्यापी होने के कारण,सभी में रम रहा है),तुम सुननेवाले,सभी श्रोता सुनकर विचार करो। ।।२।।

ओऊं सब को देवता ।। सत ओ धरमज जान ।।

हर तज शिंवरे ओर कूं ।। सो सब बेईमान ।। ३ ।।

यह रामजी सबका देव है और यही तत्त धर्म(सच्चा धर्म)है। हर(रामजी को)छोड़कर,जो दूसरों का स्मरण करते है,वे सभी बेईमान है। ।। ३ ।।

क्या हिंदु क्या तुरक हे ।। क्या दरसण सब होय ।।

रमता साहिब बाहिरी ।। सेवा सुफळ न कोय ।। ४ ।।

हिन्दू क्या,मुसलमान क्या,सभी दर्शन क्या और सभी संसार के लोग क्या,इन सभी ने रमता साहेब याने रामजी के अलावा दूसरे किसी की भी सेवा,भक्ति कितनी भी की,तो भी उन्हें रामजी पाने और का फल नहीं मिलेगा। ।। ४ ।।

सब को सुण ओ देवता ।। इनको अवगत जान ।।

के सुखदेव सत्त शब्द हे ।। दूजी भरमना ठान ।। ५ ।।

रामजी यही सभी के देव है। इस रामजी को अविगत समझो। आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि,रामनाम यह सत्तशब्द है,इसके सिवा दूसरी सभी भक्तियाँ और देव भ्रम है ऐसा जानो। ।।५।।

२६४

।। पदराग सोरठ ।।

पांडे ने:चळ ग्यान बिचारो

पांडे ने:चळ ग्यान बिचारो ।।

तां सुं सिष्ट सकळ हुय आई ।। आप सकळ सुं न्यारो ।। टेर ।।

अरे पंडित,जो निश्चल है,जन्मता नहीं,मरता नहीं सदा स्थिर है उसका ज्ञान से बिचार करो। जो जन्मती,मरती ऐसी ब्रम्हा,विष्णु,महादेव पकड के सभी चीजें माया है। उस निश्चल से ही सारी सृष्टि बनी और स्वयम् इस सृष्टि से अलग रहा है। इसका ज्ञान से विचार करो। ।।टेर।।

सत्तो रजो गुण तामस तीनुं ।। अे हद का बोहारा ।।
केती बार उपज खप जावे ।। जनमावो वार न पारा ।। १ ।।

सत्तोगुण याने विष्णु,रजोगुण याने ब्रम्हा,तमोगुण याने शंकर ये तिनों चलायमान है,निश्चल नहीं है,ये हद के व्यवहार है याने ये माया के व्यवहार है,काल में अटकने के व्यवहार है। ये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव कितने बारही उपजे और कितने बारही इनका अंत हुआ। इनके जन्म और अंत होने का वारपार लगता नहीं ।।१।।

केती बार किया फिर करसी ।। तीन लोक जुग सारा ।।
वो सत्त सबद खोज तुम लीजो ।। उलट काळ कूं मार्‍यां ।। २ ।।

इस सतशब्द ने कितने बार सारे तीन लोक चौदा भवन बनाए और कितने बार मिटाए परंतु वह निश्चल रहा। वह कभी नहीं मिटा इसलिए पंडित,उस निश्चल सतशब्द को तू खोज। यह काल ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति आदि सभी माया को खाता ऐसे काल को सतशब्द खाता उस सतशब्द को खोज। ।।२।।

जां लग उपजे खपे मरेरो ।। सो सायब की माया ।।
के सुखराम ब्रम्ह के बारे ।। होणकाळ किण खाया ।। ३ ।।

जब तक उपजता और मरता तब तक वह साहेब नहीं है,वह साहेब की माया है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,होनकाल को भी खाता ऐसा होनकाल के परे का ब्रम्ह कौन है उसको खोज। होनकाल,ब्रम्ह है फिर होनकाल को कैसे खाता?आदि में सतस्वरुप ब्रम्ह के लोक मे एक भी जीव ब्रम्ह नहीं था। सभी जीव होनकाल के मुख में थे। यह होनकाल सभी जिवों को क्रुर यातना देता,अनंत जुलूम करता। साहेब दयालू है। यह दयालू त्रायमान करनेवाले जीवों को होनकाल से निकालकर अपने सतस्वरुप देश में शरणा देता वहाँ अनंत सुख देता। जीवों का होनकाल का देश सदा के लिए छुडाकर सतस्वरुप देश में बसाता। इसकारण क्रुर होनकाल के देश की जीवों की बस्ती कम कम हो रही इस रित को सतस्वरुप होनकाल को खाता ऐसा होता। ।।३।।

२७५

।। पदराग बिलावल ।।

पेम पियाला पीजिये

पेम पियाला पीजिये ।। दूजा रस छाडो ।।
तामस तिवर मिटाय के ।। चरणा चित गाडो ।। टेर ।।

रामनाम रुपी अमृत का रस प्रेम से प्याले भर भर के पीओ और विषय रस त्यागो। संतों

के साथ का क्रोध,मैं संतो से बडा हूँ यह अहंकार मिटाकर सतगुरु के चरणो में चित गाडो। ।।टेर।।

पांच पची सुं बस करो ।। बारी नव लांगो ।।
सरम सन संक्या तजो ।। मन को सळ भांगो ।। १ ।।

पाँच इन्द्रियों के विषय रस और पच्चीस प्रकृतियों के विषयरस रामनाम रस पीकर बस करो। रामनाम लेकर नौ बारियाँ याने खिडकियाँ लाँघकर दसवे बारी याने खिड्की में जाओ । जगत की शरम तज्यो। जगत क्या कहेगा यह संकोच मन मे आने मत दो। ।।१।।

आसण नेचळ धारियो ।। दिल साबत रहिये ।।
अेक न केवळ राम कूं ।। अे निस मुख कहिये ।। २ ।।

दिल पवित्र रहेगा याने विषय वासना चलायमान नहीं होगी ऐसे वासना मुक्त शानी जगह पर निश्चल होकर आसन धारण करो और एक निकेवल राम को मुख से अखंड्ति जपो। ।।२।।

जन सुखदेव गुरूदेव को ।। पूरण पत राखो ।।
ब्रम्हंड के घर जाय के ।। इमरत रस चाखो ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतगुरु देव पर पूर्ण विश्वास रख कर बंक नाल से उलटकर ब्रम्हंड के घरमें पहुँचो और वहाँ भरपेट अमृत रस पिओ। ।।३।।

२८६

।। पदराग कल्याण ।।

प्राणी मेरा राम नाम लिव लाय
प्राणी मेरा राम नाम लिव लाय ।। ओ इमरत पीयो जी अघाय ।। टेर ।।

अरे मेरे प्राणी,मेरे जीव,तू रामजी से लिव लगा। तू रामनाम का अमृत पेट भर पीले। ।।टेर।।

ओ रंग झूठ पतंग रंग जुग को ।। देखत ही उड़ जाय ।। १ ।।

यह संसार का रंग याने संसार के सुख झूठे है। जैसे पतंग याने तितली का रंग देखते देखते उड जाता वैस सुख(विषयों के सुख)देखते देखते नष्ट हो जाते। ।।१।।

मत भूले संसार सुख मे ।। अे सब विष रस खाय ।। २ ।।

इस संसार सुख में भूल मत,इन विषय सुखों में भूल मत,ये विषय सुख जहर खाने के समान है। ।।२।।

अब के ओसर अवस आयो ।। सब तन कर्म मिटाय ।। ३ ।।

अबके समय मुश्किल से आया है,इस तन से रामनाम से लिव लगा कर तेरे काल कर्म मिटा दे। ।।३।।

जे तूं चूको ओसर अब के ।। जुग जुग गोता खाय ।। ४ ।।

अगर इस समय कर्म मिटाना चुक गया तो जुग-जुग गोते खाएगा। ।।४।।

ज्हाँ हरि गायो तन मन अरपी ।। निर्भे बेठा जाय ।। ५ ।।

जिस जिसने सतगुरु को तन,मन अर्पण कर रामजी का भजन किया है वे काल के डर से निर्भय होकर बैठे है। ।।५।।

गोविंद की सुण भक्त बिना रे ।। जुग सब प्रलय जाय ।। ६ ।।

गोविंद याने रामजी के भक्ति के बिना सभी जगत काल के प्रलय में जा रहा है। ।।६।।

मिनखा तन सुण या बिध नीको ।। हरजी का जस गाय ।। ७ ।।

यह मनुष्य शरीर इस विधी से अच्छा,उत्तम है वह सुनो,(इसमें रामजी का यश गाओं, भजन करो इस विधी के कारण मनुष्य शरीर उत्तम)यानी यह मनुष्य शरीर भजन करने के लिए उत्तम है। ।।७।।

कह सुखराम संत जन सारा ।।हर बिन जंवरो खाय ।। ८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सभी संतजन सुनो,हर से लिव नहीं लगाई तो जंवरा खाता है। ।।८।।

२८७

।। पदराग केदारा ।।

प्राणियारे नाँव गहो मुख माय

प्राणियारे नाँव गहो मुख माय ।।

साच कण बिना फूस केता ।। तां सुं भूख न जाय ।। टेर ।।

अरे प्राणी,तू सतगुरु ने बताया हुआ मोक्ष देनेवाला सतनाम मुख में धारण कर। जैसे घरमें एक दाना अनाज नहीं है परंतु अनाज के सिवा कितना भी भुस–कुटार रहा तो भी उस भुस कुटार से भूख लगने पर भूख नहीं जाती। भूख मिटाने के लिए अनाज ही लगता। वैसे ही मोक्ष पाने के लिए कितनी भी करणियाँ की तो भी उससे मोक्ष नहीं मिलता,मोक्ष मुख से सतनाम उच्चारने से मिलता। ।।टेर।।

सील समता साच बोलो ।। नाव गहो मुख मांय ।।

भवसागर के तिरण की हो ।। दूजी नहि ऊपाय ।। १ ।।

अरे प्राणी, सील रख, अपनी पत्नी छोड्कर सभी स्त्रियों को अपनी माता बहन समझ। समता रख,जगत के सभी प्राणी मात्रा ब्रम्ह है यह समझ। माया के आँखों से धनवान, गरीब,राजा,प्रजा यह हलकी–भारी विषमता उपजने मत दे,सत्य बोल,जरासा भी झूठ मत बोल। भवसागर से तिरनेवाला नाम मुख में धारण कर। इस नाम के सिवा भवसागर से तिरने का दूजा कोई उपाय नहीं है। ।।१।।

छोड माया मोह ममता ।। दुरमत दूर गमाय ।।

होय नेहेचे नाव बेठो ।। खेवट सुं मिल आय ।। २ ।।

कुटुंब,परिवार,पुत्र,पुत्री,धन,राज आदि से जखडी हुई मोह,ममता यह माया त्याग। नाम छोड्कर करणियाँ करने की दुरमती त्याग। भवसागर से पार उतरने के लिए रामनाम रुपी

नाव में निश्चल होकर बैठ और रामजी की नाव चलानेवाले सतगुरु खेवट से मिल। ।।२।।

क्रोध कुलस मल रीस तजिये ।। प्रगळ प्रेम बधाय ।।
दास सुखदेव साच बोले ।। सुख मे रहो समाय ।। ३ ।।

सतगुरु से गुस्सा करना,सतगुरु के साथ क्रोध करना छोड,सतगुरु के साथ कलुषित एवमं द्वेष,अनिर्मल स्वभाव से रहना त्याग,सतगुरु से अकबक प्रेम कर। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,मैं सत्य कह रहा हूँ ऐसा करनेसे घटमें नाम प्रगट होगा और तू आनंदपद के सुख में समा जाएगा। ।।३।।

२८९

।। पदराग केदारा ।।

प्राणियाँरे नाँव गहो तत्त सार
प्राणियाँरे नाँव गहो तत्त सार ।।
निरगुण बिना सब नाँव सारे ।। सबे काळ की चार ।।
सुरगुण नाँव अनेक जुग मे ।। बिन लेखे बिना पार ।। टेर ।।

अरे प्राणियों,आवागमन के दु:ख मिटा देता और महापरम सुख प्रगट करा देता ऐसे सभी नामो में का तत्त याने सार नाम यह निरगुण नाम याने ने:अंछर नाम है,उसे धारण करो। यह सार रुपी निर्गुण नाम के याने ने:अंछर सिवा सभी रजो,तमो,सतो गुण प्रगट करा देनेवाले नाम काल का भोजन है और ऐसे रजोगुण,तमोगुण,सतोगुण यह तीन गुण प्रगट करा देनेवाले सर्गुण के अनेक नाम जगत में है। ये नाम हिसाब नहीं करते आता याने पार नहीं आता इतने है। ।।टेर।।

कन फूका गुरू आन तज रे ।। तजिये ओ संसार ।।
बाय सबद बकवाद तजिये ।। सतगुरू ग्यान बिचार ।। १।।

रामजी छोडकर अन्य देवता तथा देवताओंकी विधि बतानेवाले कनफुंके गुरु को त्यागो। इस संसार से जडी हुई मोह ममता त्यागो। जिसमें सार शब्द नहीं है ऐसे झूठे नाम और ऐसे नामो पर होनेवाला बकवाद त्यागो याने फिजुल चर्चा त्यागो। सतगुरु जो सार नाम का ज्ञान बताते उसका विचार करो। ।।१।।

बेद कुराण पुराण तजिये ।। तजिये काम बिकार ।।
में ते दुबद्या दुरमत तज रे ।। फोडो भरम की पार ।। २।।

रजोगुणी,तमोगुणी,सतोगुणी उपजानेवाले चारो वेद,कुराण सभी पुराण त्यागो,काम विकार त्यागो,सार नाम जिसमें नहीं ऐसा मैं,तू यह दुबध्या उपजानेवाली दुरमती त्यागो। दुबध्या उपजानेवाले भ्रम को फोडो जैसे पाळ फोडकर पानी निकाल देते है उसीतरह भ्रम की पाळ फोडकर भ्रम निकाल दो। ।।२।।

लोई लाज मरजाद तज रे ।। तजिये गरब गिंवार ।।
रीस बाद अहंकार अहुँ तज ।। तज तन लावे बार ।। ३।।

सार नाम न चाहनेवाले लोगों की लाज मर्यादा छोड दो। जो गर्व सारनाम पाने के बीच अड्वा बनता है ऐसे गर्व गंवार को त्याग दो। रिस वाद विवाद का स्वभाव,अहंकार मैं मैं का स्वभाव त्यागो। सार नाम के आडे आनेवाले सभी विषयों को छोड्ने में देर मत करो। ।।३।।

धेक निंदियाँ झूठ पर हर ।। त्यागो तिवर बोहार ।।
सत्त सबद ले सच बिणजो ।। उतरणो भौ पार ।। ४।।

मत्सर,निंदा और कपट सरीखे लबाड एवमं तिमीर व्यवहार याने भ्रमीत व्यवहार इनको दूर करो सार शब्द प्रगट नहीं होगा ऐसे सभी नीच व्यवहार त्यागो। भवसागर से पार उतरने के लिए सतशब्द का सच्चा बेपार करो ।।४।।

झूट तज के साच गेहेरे ।। नाँव रटो निरधार ।।
जन सुखराम साम सुं मेळा ।। काया मंझ बिचार ।। ५।।

सभी सगुण नाम और इन सगुण नाम को देनेवाले कनफुंके गुरु,वेद,कुराण,पुराण,काम विकार,मैं,तू,भर्म,लोग लाज,क्रोध,अहंकार,मैं–मैं,द्वेष,निंद्या,आदि सभी सार नाम प्रगट करा देने के लिए झूठे है ऐसे झूठ को त्यागो और सच्चा सार नाम सतगुरु से धारण कर उस तत्त नाम को दृढता के साथ रटो। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,मजबूत बनकर यह सार नाम रटने से काया में ही साहेब का मिलना होगा। ।।५।।

२९१

।। पदराग केदारा ।।

प्राणिया रे सतगुरू तारण हार
प्राणिया रे सतगुरू तारण हार ।।
बिश्वाबीस इकीस ऊपर ।। ता मे फेर न सार ।। टेर ।।

अरे प्राणी,भवसागर में डूबते जीवों को तारनेवाला सिर्फ तत्तनाम हैं। यह तत्तनाम सिर्फ सतगुरु में प्रगट रहता यह तत्तनाम ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति आदि इन मायावी देवताओं में जरासा भी प्रगट नहीं रहता। इसलिए जीवों को तारनेवाले सिर्फ सतगुरु है। सतगुरु के सिवा तारनेवाला इस जगत में और कोई देवता या कोई देवी नहीं हैं। यह सभी नर–नारियों सौ प्रतिशत नहीं सौ प्रतिशत के परे एक सौ एक प्रतिशत समझो और इस समझ में कोई जरासा भी फेरफार मत करो। ।।टेर।।

बेद कुराण पुराण जोया ।। सुण सुण कियो बिचार ।।
पारब्रम्ह को भेद नाही ।। तिरगुण को जस लार ।। १ ।।

मैने हिंदुओं के चारो वेद देखे,मुसलमानों का कुराण देखा,अठरा पुराण देखे और देख देखकर,सुन–सुनकर सतस्वरुप ज्ञान से विचार किया तो समझा की,इन सभी वेद, कुराण,पुराण आदि में काल के परे के सतस्वरुप पारब्रम्ह में पहुँचने का भेद जरासा भी नहीं हैं। उलटा इन सभी वेद,कुराण,पुराणो में रजोगुण ब्रम्हा,सतोगुण विष्णु,तमोगुण शंकर

इन त्रिगुणी माया के देश में पहुँचने की ही विधियाँ भर भर कर विस्तार से लिखी है। ।।१।।

जोगी देख्या जंगम देख्या ।। षटदर्शण बोहार ।।
तीन लोक मे सब पच हारे ।। अंत काळ की चार ।। २ ।।

मैंने जोगी देखा,जंगम,सेवडा देखा,संन्यासी देखा,फकीर देखा,ब्राम्हण देखा और इन सारे छः दर्शनियों की पहुँच देखी। इनमें चौथे लोक जानेवाला कोई नहीं दिखा। इन सभी के व्यवहार तीन लोक के माया में पच पचकर काल से हारे हुए दिखे और अंतिम में काल से न मुक्त होते काल के ग्रास बने हुए दिखे। ।।२।।

राजा भी देख्या पातशाहो ।। देख्यो जुग संसार ।।
भवसागर मे डूब रहो हे ।। तां को काहा बिचार ।। ३ ।।

मैंने राजा भी देखा,बादशाह भी देखा और जगत के छोटे बडे संसारी नर–नारी देखे। ये सभी भवसागर में डूब रहे है और ये भवसागर से तिरेंगे ऐसी जरासी भी आशा कही नजर नहीं आ रही। ।।३।।

तत्त नाँव बिन कोई न तिरियो ।। न कोई तिरणे हार ।।
सुरगुण आन उपास सारे ।। देह धरसी बिस्तार ।। ४ ।।

तत्तनाम बिन याने रामनाम बिन आज दिन तक कोई भी नहीं तिरा और न आगे कोई तिरनेवाला है। यह दूसरे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति आदि सगुणी उपासना करनेवाले सारे आज नहीं तो कल मायावी देवतादिक के सुख भोगने पश्चात चौरासी लाख योनियों के देह धारण कर जगत में बडे प्रमाण मे दुःख भोगते बसेंगे। ।।४।।

सब संतन की सायद बोले ।। गीता किसन बिचार ।।
जन सुखराम कहे जन देखी ।। नाँव बिना हे विकार ।। ५ ।।

जगत के सभी संत तथा गीता में कृष्ण साक्ष भरकर समझाता है,सतस्वरुपी सतगुरु से शिष्य के घट में प्रगट होनेवाला तत्तनाम ही तारनेवाला हैं और अन्य सभी उपासना भवसागर में डूबानेवाली हैं । इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो जो संत भवसागर से तिरे उन सभी संतों ने वेद देखा,कुराण देखा,पुराण देखा,जोगी, जंगम,सेवडा,संन्यासी,फकीर,ब्राम्हण देखे,सगुण के सभी आन उपासक देखे,राजा,बादशहा ,जगत के छोटे बडे नर–नारी देखे,कृष्ण की गीता देखी,संतों की बाणियाँ देखी और देखकर भवसागर से तिरने के लिए ये सभी उपाय विकार है,झूठे है यह जगत को समझाया । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने कहा कि,यह तत्तनाम ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इनसे कभी प्रगट नहीं होता,यह तत्तनाम सिर्फ सतस्वरुप सतगुरु से प्रगट होता है,इसलिए सिर्फ सतगुरु ही तारनेवाले हैं। सतगुरु के सिवा और कोई तारेगा यह समझ मत करना। ।।५।।

२९५

|| पदराग धनाश्री ||

राम कथे ओऊं मथे रे

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी,मुनी,तपी,दर्शनी और नर–नारियों से कहते है कि,आपको यदि दु:ख–महादु:ख से निकलकर महासुख में जाना है तो आपको घट में वह अनघड साँई सतस्वरुप प्रगट करना होगा और उस साँई को घट में प्रगट करने के लिए क्या करना होगा क्या करना चाहिए यह ज्ञान आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज इस पद में बताते है ।

राम कथे ओऊं मथे रे ।। जब पावे निज भेव ।।
देवळ मांही देवरो रे ।। वांहा निरंजण देव ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतस्वरुप राम का ओअम सोहम अजप्पा याने साँस उसाँस में रटन करोगे,तो ही देवल याने शरीर के आत्म देवरा में निरंजन सतस्वरुपी रामजी जो आदि से भरा है उसे पाने का निजभेद मिलेगा। ।।टेर।।

मन मारो माया छाडो रे ।। ममता राखो घेर ।।
कुबद जळावो कामना रे ।। सुरत सास दिस फेर ।। १ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,उसे पाने के लिए हंस के साथवाला मायावी मन मारो। त्रिगुणी माया के मृतक अतृप्त सुख छोडो। त्रिगुणी माया के अतृप्त सुखों में लिपायमान हुयेवे ममता को त्रिगुणी माया के मृतक सुखों में जाने से घेर रखो। पाँचो विषयों की कुबुध्दी तथा मन की कामवासना जलाओ और अपनी निजसुरत त्रिगुणी माया से निकालकर श्वास में फेरकर साहेब के दिशा में साधो। ।।१।।

में ते तज मद न्हाखिये रे ।। आपो दे सब राळ ।।
चाय चिंता सब छाड के रे ।। ओ मन हर दिस बाळ ।। २ ।।

मन के मदमस्ती से मैं तू यह निर्मित हुआवा झूठा मद दूर करो तथा मन मस्ती के कारण आया हुआ घमंड छोड दो। त्रिगुणी माया के सुखों की चाहना तथा वे सुख न मिलने पर प्रगटी हुई चिंता सब त्याग दो और अपना निजमन हर के दिशा में बाळो याने लगाओ। ।।२।।

धेक निवारो डींब कूं ।। पाखंड दिजे छाड ।।
भरम मिटावो भे तजो रे ।। डिग पिच काची काड ।। ३ ।।

मन के कारण निजमन मे आया हुआ द्वेष तथा दंभ भगा दो और सभी पाखण्ड याने जंत्र, मंत्र,स्वरोदय की साधना तथा होणकाल में रखनेवाली सभी देवताओं की भक्तियाँ त्याग दो।तेरा हंस अमर है और त्रिगुणी माया मृतक है ऐसे त्रिगुणी माया याने ब्रम्हा,विष्णु, महादेव तथा त्रिगुणी माया से उपजे हुए वस्तु से कभी न कभी तृप्त सुख मिलेंगे यह आशा छोड दो,कारण तुम्हारा हंस अमर है और त्रिगुणी माया मृतक है ऐसे मृतक वस्तु

मूल में मृतक होणेकारण बार बार मरेगी,मरनेवाली वस्तु तुझे अखंड्ति सुख दे नहीं सकेगी। जहाँ तेरा सुख खंडीत होगा वहाँ तू अतृप्त बन जायेगा इसलिए ऐसी भ्रमित आशा को खत्म कर और साहेब को प्राप्त कर। आजतक अगणित काल का दु:ख भोगा वैसेही यातना का आगे भोगने का भय साहेब पाकर सदा के लिए खत्म कर दे। ना समझ के कारण साहेब के दिशा में जाने में ड्झापिच याने आगे पीछे करना यह कच्चापन निकाल डाल। ।।३।।

मान बढाई प्रहरो रे ।। सोय रहो मत कोय ।।
निस दिन गोबिंद गाय रे प्राणी ।। ज्यूं तूँ निर्मळ होय ।। ४ ।।

अरे प्राणी,मन की मान बढाई त्याग दे और त्रिगुणी माया के सुखों के भरोसे सो मत उस में जांजलीमान काल हैं यह समझ और रात-दिन सर्व सृष्टि का जो मालिक है ऐसे गोंविद को गा। वासनिक विकारी मन और विकारी ५ आत्मा से अलग होकर निर्मल वैराग्य ज्ञानी बन। ।।४।।

असुध्ध असुभ सब छाडी ये रे ।। सुभ दिंस रहो लाग ।।
जन सुखदेव तज झुठ कू रे ।। साचा सांई दिस जाग ।। ५ ।।

त्रिगुणी माया की जुलमी काल के मुख में पड्ने की अशुध्द और अशुभ क्रिया कर्म की विधियाँ त्याग दे। साहेब के महासुख के दिशा में लग जा। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी तथा जगत के सभी नर-नारियों को कह रहे की जरासा सुख देकर महादु:ख में डालनेवाली सभी त्रिगुणी माया की झूठी विधियाँ त्यागकर सहज में बिना कष्ट से महासुख देनेवाले सच्चे स्वामी की दिशा में होशियार होकर लग जाओ। ।।५।।

३०२

।। पदराग मंगल ।।

।। रे मन हर सूं डरप ।।
रे मन हर सूं डरप ।। नीच नही फूलिए ।।
जिण कीयो जुग तोय ।। ताँय मत भूलिए ।।१।।

अरे जीव,अरे नीच मन,हर से डर और हर से मगरुरी रखकर दिल में मत फूल। जिसने तुझे संसार में उत्पन्न किया है,गर्भ में तेरी रक्षा की है और वह आज भी तेरा प्रतिपाल कर रहा है ऐसे हर को मत भूल। ।।१।।

तार्‍याँ तिरणो होय ।। मार्‍याँ मर जाईये ।।
वां सम्रथ कूं छोड ।। ओर नही गाईये ।।२।।

उसके तारने से ही सभी का भवसागर से तिरना होता है और उसके मारने से ही सभी का मरना होता है। उसके मारने पर मरनेवाले का मरना कोई नहीं रोक सकता ऐसे समर्थ को छोड्कर अन्य किसी को मत भज। ।।२।।

पल मे करदे राव ।। निमष मे रंक रे ।।

वां सम्रथ की बांत ।। मान तूं संक रे ।।३।।

वह ऐसा समर्थ है कि उसके रुठनेपर एक पल में कैसा भी सामर्थ्यशाली राजा हो वह रंक हो जाता है तथा उसके कृपा से कैसा भी दरीद्री रंक हो वह सामर्थ्यशाली राजा बन जाता है इसलिए उस समर्थ की सत्ता समझ और उसके समर्थाई की मर्यादा भंग मत कर उसके समर्थाई की मर्यादा का मन में भय रख। ।।३।।

में कहुँ तोय समझाय ।। मद नही राखिये ।।
क्है सुखदेवजी तोय ।। गरीबी दाखिये ।।४।।

मैं तुझे ज्ञान से समझा के कह रहा हूँ,तू मन मे मगरुरी मत रख और मगरुरी त्यागकर गरीबी याने उसे प्राप्त करने की जरुरत बना ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जीव को कह रहे है। ।।४।।

३०३

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

रे नर समझ केवळ ध्याईये

रे नर समझ केवळ ध्याईये ।। ज्युँ परमपद पावो रे लो ।। टेर ।।

अरे मनुष्य,तू कैवल्य को समझ और उसका ध्यान कर। उसके ध्यान से तुझे परमपद मिलेगा। ।।टेर।।

अणघड देव अमूरत रामा ।। मूरत सब इन कीनी रे ।।
याँ कूं भजे तजे नर वाँ कूं ।। आ भिष्ट बुध किण दीनी रे लो ।। १ ।।

वह कैवल्य अनघड देव है,वह ब्रम्हा,विष्णु,महादेव समान घडा हुआ नहीं है। वह अमुरत राम है,वह ब्रम्हा,विष्णु,महादेव समान पाँच तत्व की मूर्ति धारा हुआ देव नहीं है। इस अनघड देव ने,इस अमुरत राम ने तीन लोक चौदा भवन की मनुष्य से लेकर ब्रम्हा, विष्णु,महादेव तक की सभी मूर्तियाँ घडाई है। तू घडे हुए ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति को भज रहा है और जिसने इनको बनाया है उनको तज रहा है यह भ्रष्ट बुध्दि तुझे किसने दी तुझे यह कैसे आई ?।१।।

काया माया सब ठाट दीसे ।। सब उनके आधारा रे ।।
ब्रम्हा बिसन महेसर सक्ती ।। वो इनको करतारा रे लो ।। २ ।।

काया,माया,कुटुंब परिवार,धन,राज आदि तेरा ठाट आज दिख रहा है वह ठाट उस अनघड,अमुरत राम के आधार से मिला। अरे,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इन सभी का वह मालिक है ।।२।।

धरण पयाँळ आकाश ज दीसे ।। ओदर में सब होई रे ।।
अेसा निरंजण समरथ साँहिब ।। जन का शब्दाँ जोई रे लो ।। ३ ।।

यह धरती,पाताल,स्वर्ग सभी उसके उदर में है। ऐसा वह निरंजन याने बिना इन्द्रियों का समर्थ सतसाहेब संतो के घट में सतशब्द के रुप मे दिखाई पडता। वह जगत के माया

आँखों से कभी नहीं दिखता। ।।३।।

ऊँ तर राम सकळ के माँही ।। पेम बिनाँ नहिं पावे रे ।।
के सुखराम बिरे दूँ लागे ।। तब हरजी घर आवे रे लो ।। ४ ।।

वह अमुरत राम सभी के घट में है परंतु वह अमुरत राम सतगुरु से प्रेम प्रगटे बिना घट में नहीं प्रगटता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जब प्राणी को सतगुरु से विरह की आग लगेगी तब वह रामजी शिष्य के घर में याने घट में प्रगटेगा। ।।४।।

३०७
।। पदराग मंगल ।।

सबसुँ निरसा होय

सबसुँ निरसा होय ।। राम गुण गाईये ।।
ज्यूं रीझे तेरा श्याम ।। परमपद पाईये ।। १ ।।

सभी की अपेक्षा नीरस होकर,(सभी की अपेक्षा सरस न होकर,मनमें नीरस होओ,सभी की अपेक्षा हल्के होओ)और राम नामका गुण गाओ। जिससे,तुम्हारे स्वामी(मालिक),खुश होंगे और तुम्हे परम पद मिलेगा। ।। १ ।।

अहुँ पद मे दु:ख होय ।। नरक मे दीजिए ।।
बिन सिंवरण किरतार ।। परत न रीजिये ।। २ ।।

अहं पद में(बडप्पन में,मन में बडा बनकर रहने में),दु:ख होगा और तुम्हे कर्तार नरक में डालेगा,उसका सुमिरन किये बिना,वह कर्तार कभी भी खुश नहीं होगा। ।। २ ।।

प्रमेसर कूँ जाण ।। संताँ कूं मानीये ।।
हर गुरू बिच अंतराय ।। कछू नही आणिये ।। ३ ।।

संतो को परमेश्वर जानकर,उनका मान करो। हर और गुरु,इनके बिच में,कुछ भी अंतराय मत लाओ। हर और गुरु के बिच में फरक मत समझो हर और गुरु एक है ऐसा समझो, हर और गुरु अलग-अलग है,ऐसा मत समझो। ।। ३ ।।

जीव दया दिल राख ।। ध्रम सो कीजिये ।।
मत कर डांवा डोल ।। राम रस पीजिये ।। ४ ।।

मन में जीवों के प्रती दया रखो और रामनाम का धर्म करो।(और राम नामके बारे में), डाँवाडोल न होते हुए,राम भक्ति का रस पिओ। ।।४।।

कसर कोर सब काडक ।। भक्त सो कीजिये ।।
तन मन धन सुखराम ।। गुराँजीने दीजिये ।। ५ ।।

अपने अन्दर कोई कोर कसर हो तो,वह सब कोर कसर निकालकर सतस्वरुप की भक्ति करो और अपना तन,मन और धन गुरुजी को समर्पित करो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ।।५।।

३२६
।। पदराग जोग धनाश्री ।।

समज समज प्राणीया

समज समज प्राणीया जो मोख चहिये ।। अेसी भक्त गहे रहिये बे ।।
सतगुरू सरणो धार सीस पर ।। राम राम मुख लहिये बे ।। टेर ।।

परापरी से २ पद है ।

१ सतस्वरुप पद

२ होनकाल पद

परापरी से जीव होनकाल पद में है। होनकाल पारब्रम्ह के साथ इच्छा माया है। जीव होनकाल पद के परे जावे नहीं इसलिए होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा ने साकारी मायावी सृष्टि बनाई। जिस मायावी सृष्टि में काल के दु:ख ओतप्रोत भरे है। काल के दु:ख से मुक्त होना है और अनंत सुख पाना है तो होनकाल छोडना चाहिए। ऐसे होनकाल छोडने को मोक्ष कहते है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज प्राणी को कहते है कि,अरे प्राणी,तुझे होनकाल के दु:खों से सदा के लिए मुक्ति चाहिए और साथ में सदा के लिए सहज मिलनवाले महासुख चाहिए तो मैं जो कहता हूँ वह सतस्वरुप की भक्ति धारण कर । उसके लिए सतस्वरुपी सतगुरु का शरणा हंस के सिरपर(शरीर के सिर पर नहीं)धारण कर और सतगुरु ने बताया हुआ रामनाम मुख से स्मरण कर। ।।टेर।।

जेसो प्रेम जक्त सूं तेरो ।। अेसो साहेब सूं लागे बडे ।।
तो सुण तीरता बार न लागे ।। नाव तुरत घट जागे बे ।। १ ।।

अरे प्राणी,जैसा संसार के मनुष्यों से तुझे प्रेम है ऐसा साहेब से प्रेम लगा तो तू सुन तुझे भवसागर से तीरने को समय नहीं लगेगा। ऐसा प्रेम साहेब से लगते ही तेरे हंस के घट में तुरंत सतनाम जागृत होगा। ।।१।।

जग कूं काडर कन्या देवे ।। भेळा जीमे आई बे ।।
अेसो हेत गुरां सूं लागे ।। तिरतां बार न काई बे ।। २ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने,प्राणी ने,साहेब से कैसे प्रेम लगाना चाहिए इसलिए जगत के कुछ दृष्टांत दिए जैसे अनजाने को,जिसके साथ बीस साल से प्रीति की ऐसी प्यारी कन्या घर से निकालकर देते और ऐसे अनजाने समधी लोगों के साथ प्रेम से एक थाली में बैठकर भोजन करते मतलब ऐसा जो जगत के लोग प्रेम करते उसी स्वभाव का प्रेम साहेब याने सतगुरु के साथ किया तो होनकाल से तिरने को समय नहीं लगेगा। ।२।

जुग केबत को बोहो डर राखे ।। अेसो जना सूं धूजे बे ।।
तो घट ग्यान प्रकासे आणर ।। तीन लोक परे सूजे बे ।। ३ ।।

जगत के लोगो से जरासी भी कसर हुई तो जगत क्या कहेगा इसका भारी डर रखता और डर के कारण जगत से धूजता। उसीप्रकार के स्वभाव का डर सतस्वरुपी संत से याने साहेब से रखता और साहेब से धूजता तो सतज्ञान प्रकाश होने को देर नहीं लगती,उस

सतप्रकाश से तीन लोक के परे के महासुख प्राप्त होते थे। ।।३।।

जुग सूं अंतर नही कुछ तेरे ।। सब प्रगट वे जाणे बे ।।
अेसो उजागर गुरू दीस हूवो ।। साहेब तब ही पीछाण्या बे ।। ४ ।।

जैसे तू जगत से उजागर रहने के लिए जरासा भी अंतर नहीं रखता मतलब त्रिगुणी माया से अंतर नहीं रखता और तेरा उजागर स्वभाव यह सभी जगत प्रगट रुप से जानते। उसी प्रकार के स्वभाव से सतगुरु के साथ बर्ताव किया तो घट में साहेब पहचानने को समय नहीं लगेगा मतलब घट में साहेब प्रगट हो जाने के कारण पहचानने में आएगा। ।।४।।

जुग के मोहो जूगे जूग प्रळे ।। सबे ग्रभ मे आया बे ।।
जन सूं हेत कीयो नर जुग मे ।। से सब मोख सीधाया बे ।। ५ ।।

जिसने-जिसने जगत से मोह किया वे सभी ८४,००,००० योनि में जुगान जुगमें गर्भ में आए और जिस जिसने संत याने साहेब से प्रेम किया वे सभी ८४,००,००० योनि के गर्भ के दुखों से मुक्त होकर महासुख में सिधाये। ।।५।।

के सुखराम समज मन माही ।। यांरे संग न होई बे ।।
भक्त जक्त का हे दोय मारग ।। भेळा चले नही कोई बे ।। ६ ।।

इसलिए अरे प्राणी,तू तेरे निजमन में समझ और जगत से प्रेम करना और जगत के केबत का डर रखना याने त्रिगुणी माया से प्रेम करना और त्रिगुणी माया का डर रखना ये छोड दे। इस त्रिगुणी माया के संग में मत जा। इसके संग जाने से तेरा मोक्ष नहीं होगा। इनके संग रहने से तेरा आवागमन का चक्र बरकरार बना रहेगा। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज प्राणी को कहते है कि आदि से ही भक्त याने सतस्वरुप और जक्त याने त्रिगुणी माया इन दोनो के स्वभाव न्यारे है। त्रिगुणी माया से मोह करने से होनकाल का आवागमन का चक्कर जैसे के वैसे बने ही रहता और साहेब से प्रेम करने से होनकाल से मोक्ष होकर ही रहता। त्रिगुणी माया और साहेब का मार्ग आदि से जोडे से जरुर है परंतु आदि से ही न्यारे है,साथ में एक जगह मोक्ष में लिजानेवाले नहीं है। इसलिए त्रिगुणी माया से मोह करने से मोक्ष कभी नहीं मिलेगा और मोक्ष चाहिए हो तो समझ कर सतगुरु सिरपर धारण करके रामनाम का रटन कर। ।।६।।

३३१

।। पदराग गोडी ।।

संता अेसा महल बणाया
संता अेसा मेहेल बणाया ।।
वा सिमरथ कूं निमख न भूलो ।। अे निस शिवरो भाया ।। टेर ।।

जैसे जगत में लोगों को रहने के लिए झुग्गा झोपडी से लेकर महल तक रहते। झुग्गा झोपडी में रहनेवाले लोगो को बारीश में बरसात के,गर्मी में धुप के,ठंड में ठंडी के दु:ख पडते,वही दु:ख परीपूर्ण महल में रहनेवाले लोगों को नहीं पडते उलटे सुख मिलते। ऐसे ही

जीवों को रहने के लिए चौरासी लाख योनि की ८३,९९,९९९ झुग्गा झोपड्याँ रहती।

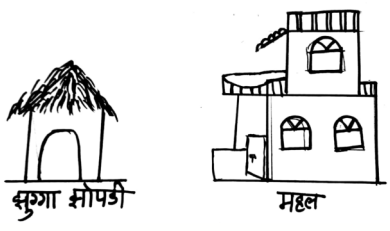

जिस में जीव को अनंत दु:ख पड्ते और जीव आवागमन के दु:ख से कभी नहीं छूट पाते परंतु इसी चौरासी लाख योनि के मनुष्य देहरुपी महल से आवागमन के दु:ख से छूट जाता और अनंत युगो से बिछ्डे हुए साहेब से मिलने का सुख लेता इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारी संतो को कहते है कि,संतो समर्थ हर ने तुम्हें ऐसा आवागमन मिटा देनेवाला अद्भुत शरीर रुपी महल बना कर दिया इसलिए ऐसे दाता हर को तुम सभी संतो पलभर के लिए भी कभी भूलो मत उसे रात–दिन सिमरो। ।।टेर।।

दो बड़ खंब लगाया भारी ।। दो ही अधर बणाया ।।
ता पर कलश चढ़ायो इण्ड्रो ।। ।। सरब धात सु छाया ।। १ ।।

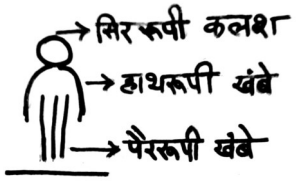

उस दाता हर ने तेरे शरीर रुपी महल को पैर रुपी दो बडे संतों के दर्शन और संगत में ले जानेवाले,चलने फिरनेवाले खंबे लगाए। संतो की सेवा आदि एवम् तुझे भोजन प्रसाद करने के लिए हाथरुपी दो खंबे बिना किसी आधार के बनाए और तेरे धड्पर सिररुपी कलस चढाया। ये तेरा धड,हात,पैर,सिर आदि रस,रुधीर,मांस,मेद,मज्जा अस्थी रेत ऐसे अद्भुत सात धातु से बनाया। ।।१।।

राख्या ताक सपत इण्ड्रे पे ।। दोय मेहेल पे बारी ।।
बारे गोख बहोतर कुटियां ।। जोर बणी से नारी ।। २ ।।

तेरे सिर रुपी कलस में आँखों के दो,नाक के दो,कान के दो,मुख का एक ऐसे सात आडे रखे। इन आँखों के आडो से आवागमन मिटा देनेवाले संतों के दर्शन और महिमा होती,जबतक देह में रहता तबतक यहाँ पर मिलनेवाले सुखों के वस्तुएँ सुख लेने के लिए सुझती। कान के आडो से हर का सतज्ञान सुनते आता और देह को सुख देनेवाले वस्तुएँ शब्दों से समझते आती। मुख आडे से समरथ का स्मरन करते आता और खाने–पीने के चीजों का सुख लेते आता। नाक आडे से सुगंध का सुख लेते आता और दुर्गंध का दु:ख त्यागते आता।अरे प्राणी,हरने ऐसे तुझे सुख देनेवाले और आवागमन मिटा देनेवाले सभी सात आडे बनाए। महल के दो आँखों के आडोपर बंद खोल करनेवाली बारियाँ याने पट रखे। यह पट संतों के दर्शन और जगत के सुख लेने में आँखें थके नहीं इसलिए पलपल मे बंद खोल करनेवाले रखे,बारा प्रकार के बडे बडे जोड और बहोत्तर छोटे मोठे जोड जोड्कर तुझे भवसिंधु पार करा देनेवाला शरीर दिया। ।।२।।

अेसा मेहेल रेहेण कूं दीया ।। फेर रिजक पुंचावे ।।

केह सुखराम ईस्या हर दाता ।। ताकूं क्यूं नही गावे ।। ३ ।।

ऐसा महल रहने को तुझे दिया,यह तेरा शरीर रुपी महल आवागमन काटने के लिए सदा बलपूर्ण,तेजपूर्ण बना रहे इसलिए तुझे प्यारा,भानेवाला,बलशाली भोजन पहुँचाया। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हर प्राणी को कहते है कि,हर ऐसे अजब दाता है। ऐसे दाता को तू गाता नहीं,उसे तू भुल जाता और जिसने तेरे हाथ,पैर,सिर,आँखें,कान,नाक,मुख इसमे से एक भी नहीं बनाए,यहाँ तक की शरीर छूटने पर तुझे काल से छुड्वाने के लिए तेरे साथ भी नहीं चलते और काल के मुख में अकेला ही छोड देते ऐसे अन्य देवताओं को तू भरपेट गाता। अरे प्राणी,ऐसी कैसी तेरी मती है?तुझे दाता क्यों नहीं सुझता?तू उसे क्यों नहीं गाता?ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हर प्राणी से पूछ रहे है। ।।३।।

३४५

।। पदराग मिश्रित ।।

संतो भाई रे भेव मिल्या गम आवे

संतो भाई रे भेव मिल्या गम आवे ।। प्रममोख पद पावे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज संतो से कहते है कि,रामनाम का सुमिरन सभी करते है परंतु मोक्ष पाने के लिए राम सुमिरन का जो भेद चाहिए वह सुमिरन का भेद जानते नहीं इसकारण राम नाम का भेद लेते परंतु परममोक्ष पद नहीं पाते। परममोक्ष पद रामनाम का भेद लेकर सुमिरन करने पर ही प्राप्त होता। ।।टेर।।

राम नाम सब लोय कहत हे ।। दर्शन भेष उचारे ।।

हिकमत बिन तो राछ सूं रे ।। सबे पच पच हारे ।। १ ।।

सभी दर्शन और भेषधारी एवमं सभी लोग रामनाम का उच्चारण करते परंतु राम नाम न लेने कारण मोक्ष न पाते पच पच कर मनुष्य तन गमा देते। जैसे हथियार हाथ में रहते परंतु हथियार चलाना जानते नहीं इसकारण हथियार हाथ में रहकर भी शत्रु मरता नहीं उल्टा मार देता इसीप्रकार रामनाम मुख से लेते परंतु काल शत्रु कैसे मारना यह समझते नहीं इसलिए काल मरता नहीं उल्टा काल के बस होकर कर्मो के दु:ख भोगते। ।।१।।

नित ऊठ दोड करत हे भारी ।। गाँव गेल नहि जाणे ।।

उझड़ पाँव तोड पग बेठा ।। नगर सुख क्युँ माणे ।। २ ।।

गाँव का रास्ता मालूम नहीं और नित्य उठकर गलियों–गलियों से भारी दौड लगाकर नगर पहुँचना चाहते परंतु कभी गाँव नहीं पहुँचते,गलियों में ही घूमते रह जाते। नगर का रास्ता त्यागकर बन के उजड रास्ते से पैर टूटते जबतक दौड्ते रहता परंतु नगर कभी नहीं पहुँचता,बन में ही अटके पड्ता इसीकारण शहर का सुख कैसे मिलेगा?इसीप्रकार मोक्ष पाने के लिए रामनाम लेने का भेद मालूम नहीं और रामनाम लेता इसकारण बंकनाल के रास्ते से उलटकर साई के देश न जाते यही संसार में इन्द्रियों के सुख भोगने में अटक जाता और साई के देश का सुख नहीं पाता। ।।२।।

दे बिध धार सकळ सब बाता ।। सुनियाँ बिना ही आवे ।।
के सुखराम मोख राहा झीणी ।। सतगुरू बिन किऊँ पावे ।। ३ ।।

जैसे देह की सारी विधियाँ संसार के ज्ञानियों से सुने और समझे बिना नहीं आती ऐसे ही मोक्ष की राह सतगुरु से समझे बिना नहीं सुझती। मोक्ष की राह संसार के राह से बहुत बहुत झीनी रहती ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते। ।।३।।

३९०

।। पदराग जोगारंभी ।।

सुणो भाई संतो म्हे ग्यान दूं
सुणो भाई संतो म्हे ग्यान दूं ।। यारी मुक्त न होय ।।
पारब्रम्ह बिन गाईयां ।। अंत जासी सब रोय ।। टेर ।।

संतो भाई,सुनो,मैं तुम्हे सतज्ञान बताता हूँ। सतस्वरुप पारब्रम्ह को गाने के सिवा ब्रम्हा, विष्णु,महादेव,शक्ति इनका ज्ञान गाने से परममुक्ति नहीं होती। ये सभी ज्ञानी,जोगी,देवता अंतसमय में रोयेंगे। ।।टेर।।

ग्यानी भूला ग्यान मे ।। सब जुग भूलो अग्यान ।।
द्रसण भूलो ऊपासना ।। सब मिल पूजे आन ।। १ ।।

ज्ञानी ज्ञान में भूल गए और जगत विषय वासना के अज्ञान में भूल गए। छःदर्शनी जोगी, जंगम,सेवडा,संन्यासी,फकीर,ब्राम्हण अपने-अपने उपासना में लगे है। ये सभी सतस्वरुप पारब्रम्ह को छोड्कर अन्य माया के देवताओं को भजते है। ।।१।।

जोगी भूला हे जोग मे ।। सोहं मंतर साज ।।
दाता भूला दान ने ।। सुरगुण गायर गाज ।। २ ।।

जोगी ओअम सोहम अजप्पा मंत्र साधने में भूल गए,दाता दान करने मे भूल गए और सगुण भक्तिवाले सगुण देव ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के जस गाने में भूल गए ।।२।।

देह बिन भुला हो देवता ।। वे सुख लियो नही जाय ।।
सतगुरू बिन सब सांभळो ।। पद की गम नही काय ।। ३ ।।

मनुष्य देह न होने के कारण देवता जो मनुष्य तन में पारब्रम्ह सतस्वरुप का सुख समझता वह पारब्रम्ह सतस्वरुप का सुख कितना भी राम नाम लेने से नहीं प्रगटता। इसप्रकार सतगुरु के बिना पारब्रम्ह सतस्वरुप पद की किसी को भी समझ नहीं हैं। ।।३।।

सत साहेब सत सबद कूं ।। बिर्ळा लखसी कोय ।।
जन सुखदेवजी पाविया ।। सतगुरू सरणे जोय ।। ४ ।।

सतसाहेब,सतशब्द कू बिरला जानता है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि, जो सतगुरु के शरण में आता है वही संत सतसाहेब को घट में प्राप्त करता है ।।४।।

३९१

।। पदराग बिहगडो ।।

सुणो सरब जुग में हेला दिया

सुणो सरब जुग में हेला दिया ।।
अणघड़ देव अलख अबनासी ।। तिण दोय डांडा कीया ।। टेर ।।

जगत के सभी लोक मेरे बोल,सतज्ञान से समझो। इस अनघड देव,अलख,अविनाशी ने दो रास्तें बनाए। ।।टेर।।

बेद कुराण पुराण पुकारे ।। भागवत सो गावे ।।
ओ सब रीत सो नरक पडण की ।। सुभ मुगत पद पावे ।। १ ।।

वेद,कुराण,पुराण,भागवत ये सभी कहते है की,विषय विकारों की रीत नरक में पड्ने की अशुभ रीत है,तो रामस्मरण की रीत काल से मुक्त होने की शुभ रीत है,ऐसी दो रीत साहेब ने बनाई है। ।।१।।

करणी करो करम सो छाडो ।। सुणो नार नर लोई ।।
तीन लोक सहिब की माया ।। मै मै को मत कोई ।। २ ।।

इसलिए सभी नर–नारियाँ नरक में डालनेवाली सभी करणियाँ छोडो,सभी कर्म छोडो एवमं तीन लोक की माया छोडो,यह साहेब की माया है,यह मेरी माया है,मेरी माया है,ऐसे मत समझो। ।।२।।

भरम अग्यान तिंवर दुख मेटो ।। ग्यान रतन ऊर लावो ।।
जामण मरण दोय हे पेंडा ।। समझ सुळझ गुण गावो ।। ३ ।।

यह भ्रम अज्ञान अंधेरा एवमं दु:ख मिटा दो और ज्ञान रतन हृदय में धारण कर लो। दो रास्ते जन्मने का ऐसे ही मरने का बनाया है।(मरने के पश्चात सोग फिकीर करना यह गुन्हा मत करो)यह जन्मने–मरने की विधि साहेब ने की है और साहेब को अज्ञान में न उलझते सतज्ञान से समझ के साहेब के गुण गाओ। ।।३।।

इण सुण राह सकळ कूं जाणो ।। जाब साहिब कूं देणा ।।
के सुखराम सोग कर सांसो ।। गुन्हा सीस क्युँ लेणा ।। ४ ।।

इसीप्रकार से सभी को देह छोड्कर जाना है और साहेब का राम नाम का स्मरण कितना किया इसका जबाब देना है। साहेब ने मरने की विधि की है उसका विरोध करना,उसकी चिंता करना,उसकी फिकीर करना,इससे विरोध करनेवालों के सिरपर साहेब का गुन्हा दाखिल होता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं। ।।४।।

३९७
।। पदराग जोग धनाश्री ।।

तीन रीत प्रमोद हमारो

तीन रीत प्रमोद हमारो ।। सुण लीज्यो नर नारी बे ।।
चित आवे सोइ राहा संभावो ।। सब पर मेहेर हमारी बे ।।टेर।।

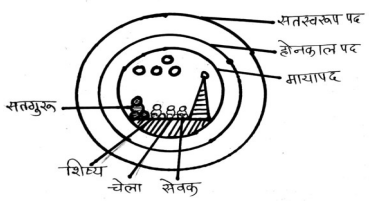

मैं मेरे भक्तों का शिष्य,चेला,सेवक ऐसे तीन प्रकार का उपदेश देता हुँ,वह सभी स्त्री पुरुष सुण लो,हे नर–नारियों,आपके

चित में जो जचे वह रास्ता पकड लो। शिष्य,चेला,सेवक इन सभी पर मेरी एक सरीखी मेहेर है। ।।टेर।।

केई सेवग केई सिष कहिजे ।। केई चेला सुण चेली बे ।।
याँ तीनारी रेण नियारी ।। में सब ही का बेली बे ।। १ ।।

मेरे कई सेवक है,कई शिष्य है और कई चेला,चेली है। इन तीनों की रहनी न्यारी–न्यारी है परंतु इन तीनों का मैं ही आधार हूँ। ।।१।।

चेला ही चेली हो सत्त मेरा ।। तन मन टेल चडावे बे ।।
प्राण उमंग धस्या मो माही ।। निमष न दूरा जावे बे ।। २ ।।

जो चेला–चेली मुझे तन,मन,पूजा याने धन चढाते है तथा जिन चेला–चेली का प्राण उल्हासित होकर मेरे में समाया रहता है और निमीष भर भी मेरे से दूर नहीं होता है वे मेरे सच्चे चेला–चेली है। ।।२।।

सिष हमारा रहे सब घर अपणे ।। याँ वां आवे जावे बे ।।
सीख हमारी सब उर लिखली ।। न्यारो कछू नही भावे बे ।। ३ ।।

मेरे शिष्य सभी अपने–अपने घर रहते। वे मेरे पास कभी–कभी आते है और वापिस अपने घर चले जाते है,उन्हें जो मैं सीख देता हूँ वह सीख अपने मन में पक्की धार लेते है और मेरे सीख सिवा दूजी कोई सीख उन्हें नहीं सुहाती है वे मेरे सच्चे शिष्य है। ।।३।।

सेवग सोई सेवा कर हे ।। साँमी ओसर आई बे ।।
तन मन धन लग वे नही चूके ।। से सेवग सत्त भाई बे ।। ४ ।।

मेरे सेवक वे है जो मेरी सेवा करते है। स्वामी के कार्य प्रसंग में आकर हाजिर होते है और कार्य प्रसंग में वे तन,मन,धन से कार्य करते है। उसमें जरासी भी चूक नहीं करते है वे मेरे सच्चे सेवक है। ।।४।।

के सुखराम सुणो सिष सारा ।। यामे इधको सोई बे ।।
पतब्रता को अंग ताँ मांही ।। बचन न लोपे कोई बे ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी शिष्यों को बोले, इन सभी चेला,चेली,शिष्य और सेवक में जिसके अंदर पतिव्रतपण का स्वभाव प्रगटा है याने मेरा एक भी वचन नहीं लोपते है वही सब चेला,चेली,शिष्य,सेवक में श्रेष्ठ है। ।।५।।

४०१

।। पदराग मस्त ।।

तूं तो निरगुण पद सूं मिल रे
तूं तो निरगुण पद सूं मिल रे ।। ज्ञानी मन नर रे ।।
तूं तो पारब्रम्ह सू मिल रे ।। ज्ञानी मन नर रे ।। टेर ।।

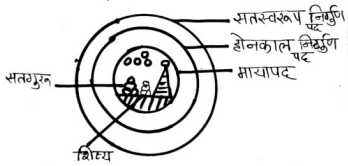

अरे मेरे ज्ञानी मन,तू तो जहाँ काल नहीं है,महासुख है,ऐसे सतस्वरुप निरगुण पद से मिल। ऐसे सतस्वरुप पारब्रम्ह पद से

मिल और जहाँ काल है,महादु:ख है ऐसा होनकाल निरगुण पद,होनकाल पारब्रम्ह पद त्याग। ।।टेर।।

भक्त मुक्त की गेल संभावो ।। नांव अमीरस इम्रत खावो ।।
सास ऊसास की डोर लगावो ।। रे नर भजन पूर कर ले रे ।। १ ।।

तू विषय रसों का आवागमन का रास्ता त्याग और सतस्वरुप भक्ति का आवागमन से मुक्त होने का रास्ता धारण कर। तू विषय रस न पीते ने:अंछर नामरुपी अमृत रस पी। साँस उसाँस पर रामनाम की लिव लगा और भरपूर भजन कर। ।।१।।

आसण मार जुगत कर बेसो ।। या घट मांय पवन संग पेसो ।।
जब तन खोज सबद मुख केसो ।। रे मन आतम सोझर छिल रे ।। २ ।।

अरे मन,भजन करने के लिए आसन मारकर युक्ति से बैठ और अपने घट के अंदर साँस के साथ धस जा। शब्द मुख से रटकर सारा शरीर खोज और आत्मा में का परमात्मा पा। ।।२।।

लिव बंध सिंवरण अे निस कीजे ।। नाभी मांय सुरत मन दीजे ।।
रसणा जोर ऊतावळ कीजे ।। रे मन बिरहन सू नित खिल रे ।। ३ ।।

अरे मन,रात-दिन लिव बंध नाम का सुमीरन कर और नाभी याने साँस-साँस में सुरत और मन लगा,रसना धारोधार और उतावली चला। नित्य सतस्वरुप परब्रम्ह के विरह में फूल की कली जैसे खिलती वैसे खिल के रह। ।।३।।

बंकनाळ होय ऊँचा जावो ।। त्रकुटी मांय अनाहद बहावो ।।
सुषमण गंग निसो दिन न्हावो ।। रे मन दसमे द्वार में पिल रे ।। ४ ।।

अरे मन,बकंनाल से स्वर्ग,स्वर्ग से मेरु पर्वत,मेरु पर्वत से त्रिगुटी में ऊँचा चढ और त्रिगुटी में अनहद आवाजे सुन और गंगा,यमुना,सुषमना में नित्य न्हा और दसवेद्वार में जाकर रह। ।।४।।

के सुखराम सुणो संत आई ।। निरगुण सूं हम मिलीया मांई ।।
पिछे आ बिध रीत बताई ।। रे मन थाका मुसा बिल रे ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी संतों को कहते है कि,इसप्रकार की विधि करके मैं सतस्वरुप निरगुण में मिला। जैसे चूहा थक कर बिल में जाकर विश्राम लेता ऐसा मैं सतस्वरुप पारब्रम्ह में जाकर विश्राम ले रहा हूँ। अब मेरी पारब्रम्ह सतस्वरुप में पहुँचने की कोई विधि करने की बाकी नहीं रही है। ।।५।।।

४०२

।। पदराग मस्त ।।

तुं तो स्याम धणी कूं बर अे
तुं तो स्याम धणी कूं बर अे ।। लाड लड़ी लाछा ।।
ज्यूं तेरा सब सिध कारज सर अे ।। लाड़ लड़ी लाछा ।। टेर ।।

सतगुरु पिता अपने लाड्लड्ले आत्मा पुत्री से कहते है कि,तू अमर शाम पति से विवाह कर। आनदेव जो शादि के पहले आज ही मुर्दे है उससे तेरा जन्म–मरने से मुक्त होने का कार्य कभी सिध्द नहीं होगा इसलिए अमर शाम से शादी कर जिससे तेरे सभी कार्य सिध्द होंगे। ।।टेर।।

आन देव सब उला होई ।। जे मर जाय जगत ज्यूं सोई ।।
च्यार दिना का सगा सोई ।। हे अे तुं तो अबगत सूं रत्त रे अे ।। १ ।।

आत्मा के पिता सतगुरु कहते है कि,रामजी छोड्कर ये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति तथा सभी अन्य देवता जैसे जगत के लोग मरते है वैसे ये सभी अपनी उम्र पूरी होने के पश्चात मरते है,इनका संबंध चार दिन का ही होता है,सदा का नहीं होता। फरक इतना ही है इनकी उम्र मनुष्य के उम्र के तुलना में बहुत जादा होती है इसलिए मनुष्य को ब्रम्हा ,विष्णु,महादेव,शक्ति तथा सभी देवता जगत के मनुष्य समान मरते है यह नहीं समझता, इसलिए तू अविगत से लगे रह। ।।१।।

नव दस सेस अठयांसी सारा ।। ब्रम्हा बिस्न महेस बीचारा ।।
धर धर जनम पचे पच हारा ।। हे अे तुं तो केवळ को घर कर अे ।। २ ।।

आत्मा के पिता सतगुरु कहते है कि,नौ जोगेश्वर,दस अवतार,अठ्यासी हजार ऋषी, ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ये बिचारे बार–बार जन्म धारण कर रहे और मर रहे। ये सभी जन्म–मरने से मुक्त होने के लिए काल से हार जा रहे। इसलिए तू ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,नौ जोगेश्वर,दस अवतार आदि का घर मत पकड । तू तो इन के घर छोड और काल के परे का कैवल्य रामजी का घर पकड। ।।२।।

धर ब्रम्हंड अेबी मर जावे ।। जंवरो सोज सकळ कूं खावे ।।
वां लग काळ कबू नहि जावे ।। हे अे तूं तो अवगत आसा कर अे ।। ३ ।।

सतगुरु आत्मा को कहते है कि,धरती,आकाश,अग्नि,जल,वायु ये सभी महाप्रलय मे मर जाते। यह होनकाल एक एक को खोज खोज कर मारकर खाता। इसलिए तू इनको छोड और जहाँ काल कभी नहीं पहुँचता ऐसे अविगत की आशा रख और उसके घर जा। ।३।

के सुखराम सबी बर काचा ।। फेरां पेली मरण की आसा ।।
मुरदां सूं क्या सत मन पासा ।। हा अे तूं तो कयो हमारो कर अे ।। ४ ।।

ये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,नौ जोगेश्वर,दस अवतार आदि सभी वर कच्चे है,मन से मान लेने पुरते वर है, ये मुरदे है जैसे जगत में मुरदे के साथ कभी कोई फेरे नहीं लेता और तू तो इन मुरदो के साथ के फेरो की आशा कर रहा है,यह कैसे तेरी सोच है?जैसे मुरदे के साथ फेरे लेकर कोई विवाह के सुख नहीं ले सकता वैसे तू भी ब्रम्हा,विष्णु,महादेव की भक्ति कर सतपद के सुख नहीं ले सकेगा इसलिए मैं कहता,यह तू मान और अविगत की भक्ति कर,सतपद को पहुँच और सतपद के महासुख ले ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी

महाराज आत्मा को बोले। ।।४।।

४०३

।। पदराग मस्त ।।

तुं तो ऊण पद सूं मिल जारे

तुं तो ऊण पद सूं मिल जा रे ।। लाड़ लड़ा मन रे ।।

तूं तो आवागवण न आरे ।। सुधळीयां मन रे ।। टेर ।।

अरे लाड्ले मन,अरे सयाने मन,अरे समझदार मन,तू जन्म मरण के पद से निकल और जहाँ जन्म–मरण नहीं उस पद में मिल। ।।टेर।।

रज गुण तामस ममता त्यागो ।। सत्तगुण सीळ निंद सूं जागो ।।

रच मच नाँव भजन सूं लागो ।। रे मन ऊलट आद घर आ रे ।। १ ।।

तू रजोगुण याने ब्रम्हा,तामस गुण याने शंकर,सतोगुण याने विष्णु से ममता त्याग। यह मेरे है और मुझे काल से बचाएँगे,अनंत सुख देगें इस अज्ञान निंद से जाग। ये ही सभी आदि से काल के मुख में है और सुख दु:ख में भटक रहे है तो ये तुझे काल से कैसे बचाएँगे? और बिना दु:ख के अनंत सुख कैसे देंगे यह तू समझ इसलिए ममता छोड़,सत्वगुण धारण कर और शीलव्रत रख,अज्ञानता की नींद से जाग। काल से तो सिर्फ नाम बचा सकता और वही तुझे बिना दु:ख के अनंत सुख दे सकता इसलिए तू मस्त होकर राम भजन करने में लग। इस राम भजन से तु तेरे ही घट में बंक नाल से उलटकर सतस्वरुप के महासुख के आद घर पहुँचेगा। ।।१।।

बेद कुराण पुराण तजी जे ।। अेको नाँव निकेवळ लिजे ।।

सब तन चूर गिगन घर किजे ।। रे मन दसमे द्वार समा रे ।। २ ।।

तू वेद,कुराण,पुराण की सभी क्रिया करणियाँ त्याग और महासुख देनेवाले एक निकेवल नाम से लग। तू तेरा सारा शरीर छेदन करके गगन में जाकर घर बना और दसवेद्वार में जहाँ काल नहीं पहुँचता वहाँ समा जा। ।।२।।

त्रिगूण रूप तजो सब भाई ।। राम बिना सब झुट सगाई ।।

दसमो द्वार ऊघाड़ो जाई ।। रे मन ने: चळ सूं लिव ल्यारे ।। ३ ।।

ब्रम्हा, विष्णु,महादेव इन त्रिगुणी रुपो को त्याग। इनके संग से काल नहीं छुटता। काल रामजी के संग से छुटता इसलिए ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के साथ ममता करना यह काल के मुख से मुक्त होने के लिए झूठी है। रामजी से प्रीति कर और दसवेद्वार खोल। अरे जीव, जो निश्चल है,माया के समान कभी प्रलय में नहीं जाता ऐसे रामजी के साथ लिव लगा। ।।३।।

के सुखराम सुणाय सुणाई ।। आवागवण संकट बोहो भाई ।।

ब्हो दु:ख जीव सहेतन माई ।। रे मन अवगत देव मना रे ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बजा–बजाकर कहते है कि,आवागमन का संकट बहुत

भारी है। ये भारी दु:ख जीव से सहे नहीं जाते इसलिए हे मन,ये दु:ख से मुक्त करानेवाले अविगत देव को मना। उसे घट में प्रगट कर और बिना दु:ख के महासुख सदा के लिए भोग। ।।४।।